ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक ▸ वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला माता भगवती देवी शर्मा

E-mail : news@pragyaabhiyan.info Website : www.pragyaabhiyan.info Phone - 09258369725 Fax : 01334-260866

वर्ष-२४, अंक-१ । १ जुलाई २०११ । शांतिकुंज, हरिद्वार । वार्षिक चंदा ₹ ३०/-, विदेश में ₹ ४००/-

दिव्य अनुदानों की वर्षा-वेला और जाग्रत् आत्माओं को आमंत्रण

आत्मिक प्रगति का अनिवार्य चरण

आत्मिक प्रगति के तीन अवलम्बन हैं, एक मार्गदर्शन, दूसरा पुरुषार्थ और तीसरा वरिष्ठों का अनुदान। अध्यात्म क्षेत्र में जो साधक अपने आचरण द्वारा अपने आपको दिव्यात्माओं का सम्बन्धी, सहयोगी, परिजन सिद्ध कर देते हैं, उन्हें उन दिव्य अभिभावकों का, ईश्वर का बहुमुखी सहयोग अवश्य मिलता है।

पुराणों एवं इतिहास में इसकी अगणित साक्षियाँ मिलती हैं। हनुमान, अंगद और नल-नील की चमत्कारी उपलब्धियाँ उनकी अपनी उपार्जित नहीं थीं, वे अनुदान में मिली थीं। कुन्तीपुत्र पाण्डव जो पराक्रम दिखा सके वह उनका निज का नहीं, देव प्रदत्त था। गंगा लाए तो भागीरथ ही थे, पर उस सफलता में उन्हें शिवजी का अनुदान कम नहीं मिला था।

सर्वविदित है कि युग-निर्माण योजना के सूत्र संचालकों की अपनी उपार्जित आत्मिक सम्पदा जितनी है, उससे असंख्य गुनी अनुदानस्वरूप मिलती है। यदि ऐसा न होता तो गोवर्धन उठाने और समुद्र सेतु बनाने जैसे जो महान् प्रयत्न चल रहे हैं, उनमें से एक भी अग्रगामी न हो सका होता।

असाधारण समय, दुर्लभ अनुदान

सामान्य स्थिति में ऐसे दुर्लभ अनुदान सहज ही नहीं मिलते, किन्तु कभी-कभी उन्हें मुक्तहस्त से वितरित किया जाता है। कुछ समय ऐसे होते हैं, जब साधकों को सिद्ध ढूँढ़ने पड़ते हैं। ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं। समय की आवश्यकता पूरी करने के लिए भगवान तूफान की तरह युगान्तरीय चेतना बनकर आते हैं और अपने प्रवाह में धूलिकणों और तिनकों तक को उछालकर गगनचुम्बी बनने का अवसर प्रदान करते हैं।

सामान्य अवसरों पर सेना में भर्ती होने के लिए अनेक प्रकार की जाँच-पड़तालों में पास होना पड़ता है, तब जगह मिलती है। किन्तु देश पर शत्रु चढ़ आने की स्थिति में आपत्तिकालीन नियम बनते हैं और अनिच्छुक वयस्कों को भी बलपूर्वक सेना में भर्ती होने के लिए विवश किया जाता है। युगसन्धि ऐसी ही असामान्य बेला है, जिसमें ध्वंस को सृजन में, दैत्य को देव में परिवर्तित करने के लिए सूक्ष्म और स्थूल जगत में कायाकल्प जैसी प्रक्रिया उफनती दृष्टिगोचर होगी। लोकचेतना में भरी हुई अवांछनीयता की गलाई और उसकी उपयुक्तता के ढाँचे में ढलाई होने जा रही है। इसके लिए आध्यात्मिक भट्टी गर्म करने में समर्थ प्रचण्ड प्राण-प्रवाह के अनुदान की व्यवस्था अनिवार्य हो गई है।

हिमालय के मध्यवर्ती आध्यात्मिक ध्रुव केन्द्र से युग-सन्धि के दिनों एक विशिष्ट प्राण-प्रवाह रेडियो प्रसारण की तरह, वर्षा मानसून की तरह उमड़ता रहेगा। उससे लाभान्वित होने के लिए सभी जागरूकों को आमन्त्रित किया गया है। युग सैनिकों का साहस एवं उत्तरदायित्व अधिक होने के कारण उन्हें अनुदान भी उसी स्तर का मिलेगा, किन्तु जो इतना साहस जुटा न सकेंगे, उन्हें भी अपनी पात्रता के अनुरूप हल्के स्तर के उपहार पाने का अवसर मिलेगा।

अकाल पड़ने पर कुआँ खोदने आदि के लिए तकाबी बाँटने के लिए सरकारी अफसर स्वयं गाँव-गाँव घूमते हैं। इतना ही नहीं, खोदने की सुविधा एवं जानकारी देते हुए प्रयत्नरत होने के लिए किसानों की खुशामद भी करते हैं। यों प्रत्यक्ष लाभ किसानों का ही है। पीने का पानी और सिंचाई का साधन मिलने से राहत उन्हीं को मिलती हैं, फिर भी सरकार जानती है कि समर्थ किसानों पर ही देश की खुशहाली निर्भर है। इसलिए तकाब लेने और कुएँ खोदते देखकर उन्हें भी कम प्रसन्नता नहीं होती। युगसन्धि की वेला में हिमालय की दिव्य शक्तियाँ जो अनुदान वितरण कर रही हैं, वे कई प्रकार की हैं और उनकी गरिमा का स्तर भी क्रमशः अधिकाधिक बढ़ा-चढ़ा है। जो उन्हें प्राप्त करेगा, वह आत्म श्रेय और दैवी अनुदान का दुहरा लाभ प्राप्त करने वाला सौभाग्यशाली होगा।

विशिष्ट अनुदान, विशेष प्रयोजन

यह दुर्लभ अनुदान विशिष्ट उद्देश्यों के लिए है। इसका प्रथम उद्देश्य सृष्टि सन्तुलन बनाने की ईश्वरीय इच्छा को पूरा करना है। अवतरण इसी प्रयोजन के लिए होते हैं। अधर्म का उन्मूलन और धर्म का संस्थापन ही अवतारों का उद्देश्य रहा है। इन दिनों भी इसी उद्देश्य के लिए प्रज्ञावतार की युगान्तरीय चेतना गतिशील हो रही है। उसके अनुकूल वातावरण बन सके, इसके लिए देवपक्ष का समर्थन करने वाले प्रवाह अदृश्य लोक से चल पड़े हैं।

दूसरा उद्देश्य है संचित संस्कार संपदा वाले सत्पात्रों, जागरूकों को सामयिक श्रेय मिल सके। सूखी हुई दूब भी वर्षाऋतु आते ही हरी-भरी हो उठती है। यह उसका पुरुषार्थ नहीं, सौभाग्य-अनुदान है। सीप को मोती की उपलब्धि उसका पुरुषार्थ नहीं, समय का सुयोग एवं वरिष्ठ का अनुग्रह है। इसमें दाता और ग्रहीता दोनों ही कृतकृत्य होते हैं। दुर्भाग्य और कुछ नहीं, पात्रता के अभाव का प्रतिफल मात्र है। विशेषतया ऐसे सुअवसरों की उपेक्षा करना तो एक प्रकार स्वयं अपनाया गया अभिशाप है।

> नये युग का आह्वान हो चुका है। वह व्यक्ति का नहीं, समुदाय का होगा। इस युग का क्रंदन व्यक्ति विशेष का क्रंदन नहीं, सारी मानव जाति का क्रंदन होगा और उस क्रंदन से हमारे भीतर दयाभाव नहीं जागेगा, बल्कि जागेगी हमारी सदियों से सोई हुई न्यायबुद्धि।
>
> हम सब इस नये युग का स्वागत करें, जिसकी पदचाप स्पष्ट सुनाई दे रही है। सर्वसाधारण के भाग्य प्रवाह में हम स्वयं को भी समर्पित होने दें, ताकि नये युग के सृजन में हम भी ईमानदार सहयोगी बन सकें। समय की गति बदली है और युग ने करवट ली है। स्वेच्छा से नियतिवश हमें नयी परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदलना ही होगा। अच्छा हो यदि हम मिलकर मानवता का जयगान करें।
>
> **– डॉ. राधाकृष्णन**

युगान्तरीय चेतना जाग्रतों का वरण करती है और उन्हीं के माध्यम से अपना प्रयोजन पूर्ण करती है। इन वरण-वाहनों का सौभाग्य अनन्तकाल तक सराहा जाता रहता है। प्रज्ञावतार की इस पुण्य बेला में ऐसा ही सुयोग सामने है। उसमें जाग्रतों के लिए अनुपम अनुदानों का सुअवसर अनायास ही प्रस्तुत है, किन्तु उसके साथ सदा की तरह अभी भी पुण्य प्रयोजनों के लिए अनुदानों का उपयोग करने की शर्त जुड़ी हुई है। जो दूसरों की जेब काटकर अपनी मजेदारी का ताना-बाना बुनते रहते हैं, उनके लिए तो यह सुयोग भी संतोषप्रद सिद्ध न हो सकेगा। देव समुदाय में प्रवेश करने की प्रामाणिकता-पात्रता तो उदात्त चरित्र, उदार व्यवहार के सहारे ही विकसित होती है।

सदुपयोग से ही मिलेगा श्रेय-सौभाग्य

दैवी अनुदान उपलब्ध करने वालों की सूची तैयार की जा सके तो अनादिकाल से लेकर अद्यावधि एक भी ऐसा न मिलेगा जो उन वरदानों को पुण्य-प्रयोजनों में खर्च न करके अपनी वासना-तृष्णा की पूर्ति में लगातार बर्बाद करता रहा हो। जिनने ऐसी भूल की है उन को दुगर्ति सहन करनी पड़ी है। भस्मासुर का प्रसंग सर्वविदित है, जिसमें उपलब्धकर्त्ता और दानी दोनों को ही यातना और निन्दा का भागी बनना पड़ा था। रावण, कंस, हिरण्यकश्यप, मारीच ने दैवी-सिद्धियाँ प्राप्त करके उनसे निकृष्ट स्वार्थों की सिद्धि सोची तो उनका प्रयास-परिश्रम लाभदायक सिद्ध न होकर हानिकारक परिणाम ही उत्पन्न कर सका। यही सनातन क्रम है। 'दैवी अनुदान दिव्य प्रयोजनों के लिए'-का अकाट्य सिद्धान्त जो सही रूप से समझ पाते हैं उन्हीं, की सर्वाङ्गीण प्रगति में दैवी अनुकम्पा का, गुरुकृपा का समुचित सहयोग बन पड़ता है। उन्हीं को सच्चा लाभ मिलता है।

इन दिनों यह सुविधा अधिक सरलतापूर्वक असंख्यों को उपलब्ध हो रही है। वर्षा के दिनों नमी और हरितिमा का दृश्य अधिक स्थानों पर देखा जा सकता है। युगसंधियों में दैवी तत्वों को उभारने के लिए दिव्य अनुकम्पा वर्षा की तरह झरती है और जहाँ भी थोड़ी अनुकूलता पाती है, वहीं अपनी उत्पादक शक्ति का परिचय देने लगती है। गड्ढे और नाले भी बिना प्रयास के भरे-पूरे दीखने लगते हैं। अवतारों के प्रकटीकरण की बेला में यह प्रवाह और भी तेजी से बहने लगता है। रीछ-वानरों ने, ग्वाल-बालों ने अपनी सदाशयता भर निश्चित की थी, इतने भर से उन्हें सामर्थ्य और श्रेय का अजस्र अनुदान मिलने लगा था, ठीक वैसा ही अवसर इन दिनों भी है।

- वाङ्मय २८/४.१९

गायत्री मंत्र को मिला लता दीदी का स्वर

ऑडियो सीडी प्रकाशित

स्वर साम्राज्ञी सुश्री लता मंगेशकर ने गायत्री मंत्र और गायत्री चालीसा को अपने स्वर में गाकर युगपुरुष परम पूज्य गुरुदेव को उनकी जन्मशताब्दी पर अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की है। लता दीदी ने अब तक अनेक लोगों के आग्रह के बावजूद गायत्री मंत्र रिकॉर्ड नहीं कराया था, लेकिन वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा राष्ट्र के नवोन्मेष के लिए किये गये अद्वितीय कार्यों का सम्मान करते हुए आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के आग्रह को बड़ी सहजता से स्वीकार कर लिया। उनके अनुरोध पर लता दीदी ने गायत्री मंत्र और गायत्री की आरती दोनों का गायन किया है, जिसकी सीडी शांतिकुंज में उपलब्ध है।

आदरणीय डॉ. साहब लता दीदी से भेंट करने स्वयं मुंबई गये थे। इस अवसर पर उन्होंने नागपुर अश्वमेध और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शामिल होने के लिए भेजे गये आमंत्रण का स्मरण किया। अपने स्वास्थ्य की मर्यादाओं के कारण वे भले ही इन कार्यक्रमों में न आ पायी हों, किंतु शांतिकुंज आने और युगऋषि की तप:स्थली के दर्शन करने की इच्छा उन्होंने व्यक्त की। आदरणीय डॉ. साहब ने गायत्री मंत्र की चादर, पूज्य गुरुदेव की साहित्य संजीवनी, देसंविवि का मोमेण्टो आदि भेंट करते हुए उनका सम्मान किया।

गुरुपूर्णिमा से श्रावणी तक के अभियान को अधिक प्राणवान बनायें

परिजनों की जिज्ञासाओं के आधार पर कुछ और स्पष्टीकरण

पाक्षिक के पिछले (१६ जून) के अंक में गुरुपर्व से श्रावणी तक कुछ विशेष करने के जो सूत्र एवं कार्यक्रम दिये गये थे, उनको लेकर परिजनों में सराहनीय उत्साह उभरा है तथा उन्होंने कुछ बेहतर करने की इच्छा से अनेक जिज्ञासाएँ भी प्रकट की हैं। प्रस्तुत आलेख परिजनों की उक्त दोनों प्रतिक्रियाओं को लक्ष्य करके लिखा गया है। विश्वास है कि परिजनों के उत्साह और उल्लास में इससे और अधिक वृद्धि हो सकेगी।

उत्साहजनक पहल

विभिन्न क्षेत्रों के परिजनों ने गुरुपूर्णिमा पर गुरुसत्ता को दो तरह की श्रद्धांजलियाँ देने तथा वृक्षगंगा अभियान को गति देने के लिए अपने-अपने स्तर पर तत्काल प्रयास चालू कर दिये हैं। उनमें से कुछ बिंदु इस प्रकार हैं :-

युगऋषि से दीक्षित परिजनों से विशेष संपर्क करके उन्हें गुरुपूर्णिमा के पूर्व निम्नानुसार संकल्पित कराने की योजना बनाई जा रही है।

१. पुस्तिका *'दीक्षित-नैष्ठिक परिजन चढ़ायें एक सार्थक श्रद्धांजलि'* के आधार पर (क) स्वयं के व्यक्तित्व परिष्कार के लिए क्या नये संकल्प ले रहे हैं? (ख)कितने दीक्षितों से संपर्क करके उन्हें पहले से बेहतर जीवन साधना के लिए संकल्पित करायेंगे?

२. प्राणवान परिजन *'युगऋषि की कार्ययोजना समझें-समझायें, लाभ उठायें'*नामक पुस्तिका के आधार पर कितने नये क्षेत्रों तथा किन नये वर्गों तक युग निर्माण के प्रेरक सूत्र पहुँचाने के लिए तैयार-संकल्पित हो रहे हैं?

३. वृक्षारोपण अभियान को गति देने के लिए सर्वेक्षण प्रारंभ कर दिया गया है। स्थानों-संस्थानों को सूचीबद्ध करके वहाँ सुनिश्चित संख्या में वृक्षारोपण की व्यवस्था बनाई जा रही है।

इसके लिए विभिन्न संगठित इकाइयों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार नई पौध तैयार करने की व्यवस्था बनाई है। इसमें से कुछ दर्जन पौधों से लेकर कई हजार पौधों के लक्ष्य रखे गये हैं। इसमें स्वयं के श्रम से काम करने वालों से लेकर धन-सम्पन्नों के अनुदानों तक का उपयोग किया जा रहा है। अनेक स्थानों पर वन विभाग की नर्सरियों से सम्पर्क करके इच्छित संख्या में जरूरत के अनुसार वृक्षों की पौध सस्ती दरों पर प्राप्त करने की व्यवस्था भी बनाई गयी है। यह सभी प्रयास सराहनीय और जन-जन के लिए प्रेरक-उत्साहवर्धक हैं।

अनुमानित आँकड़े

वृक्षगंगा अभियान के प्रति जन-जन में उभरे उत्साह और हो रही तैयारियों को देखते हुए देश के विभिन्न प्रांतों-क्षेत्रों में होने वाले वृक्षारोपण की अनुमानित संख्या इस प्रकार है।

★उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान तथा केन्द्र शासित क्षेत्र सहित पूर्वोत्तर राज्यों में प्रत्येक में १० लाख; **कुल ६० लाख।**

★महाराष्ट्र एवं उड़ीसा में प्रत्येक में ८ लाख; **कुल १६ लाख।**

★उत्तराखण्ड, झारखंड, बिहार तथा दिल्ली (एन.सी.आर.) में प्रत्येक में ५ लाख; **कुल २० लाख।**

★ बंगाल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल एवं पंजाब में प्रत्येक में १ लाख; **कुल ५ लाख।**

★तमिलनाडु एवं हरियाणा, हिमाचल एवं जम्मू-कश्मीर में प्रत्येक में ५० हजार; **कुल २ लाख।**

यह कुल संख्या **एक करोड़ से अधिक** हो जाती है। आशा की जाती है कि युग निर्माण परिवार एवं अन्य जागरूक संगठनों के सहयोग से कार्य उससे अधिक ही हो सकेगा।

इस संदर्भ में जोन, उपजोन केन्द्रों एवं जाग्रत् शक्तिपीठों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में हो रहे या होने वाले वृक्षारोपण का सही रिकॉर्ड रखें, ताकि अभियान कहाँ तक पहुँचा? इसके सही आँकड़े प्राप्त किये जा सकें। साथ ही परस्पर सहयोग की व्यवस्था भी बनाई जा सके।

कुछ विशेष प्रयोग

विभिन्न क्षेत्रों में गुरुपूर्णिमा से लेकर अगस्त माह के अंत तक तरुपुत्र, तरुमित्र यज्ञों की योजना बनाई जा रही है। एक वृक्ष लगाने को एक कुण्डीय यज्ञ के समकक्ष मानकर यह यज्ञ किये-कराये जायेंगे। इस दिशा में व्यापक उत्साह जन सामान्य में भी उभर रहा है। स्मृति उपवन लगाने के क्रम में भी इसी विधा के प्रयोग के लिए परिजन प्रयत्नशील हैं।

कम पानी वाले क्षेत्रों में वृक्षों को कम पानी से भी जीवित रखने के दो सफल प्रयोग सामने आये हैं। इसमें एक लीटर पानी प्रतिदिन से भी पौधों की जीवन-रक्षा हो जाती है। प्रयोग इस प्रकार हैं -

(क) अभिषेक पात्र- लगाये गये पौधों की जड़ के पास किसी मिट्टी, टीन या प्लास्टिक के पात्र में शिवजी के अभिषेक जैसी व्यवस्था बनाई जाये। पात्र के पैंदे में छोटा छेद करके उसमें कपड़े की बाती डाल दी जाय। पात्र में जल भरकर उसे तीन-चार पत्थर या ईंट के टुकड़ों पर इस प्रकार रख दिया जाय कि बूँद-बूँद पानी पौधे की जड़ के पास की मिट्टी को गीला किये रहे। यह प्रयोग राजसमंद (राजस्थान) शक्तिपीठ के पास एक पहाड़ी को हराभरा करने में सफल सिद्ध हुआ है।

(ख) उल्टी बोतल - पौधे या वृक्ष की जड़ के पास प्लास्टिक की एक लीटर वाली बोतल को पैंदा काटकर उसे उल्टा गाढ़ दिया जाय। बोतल का भाग जमीन से दो-तीन इंच ऊपर रहे। उस बोतल में २४ घंटे में एक लीटर पानी डालते रहने से पौधे की रक्षा हो जाती है। वर्षा ऋतु में वे तेजी से पनप जाते हैं। इस प्रयोग से महाराष्ट्र के घाटे गुरुजी ने हजारों वृक्षों को जीवनदान दिया है।

अपनों को पिछड़ने, बिछुड़ने न दें

युगऋषि ने अपने यह भाव जगह-जगह प्रकट किए हैं कि उनके साथ जो नर-नारी भावनापूर्वक जुड़े हैं, वे सभी कई जन्मों से साथ रहने वाली आत्माएँ हैं। उन्हें महान् उद्देश्य की पूर्ति में सहयोगी की भूमिका निभाने के लिए प्रयत्नपूर्वक लाया गया है। मायावश वे स्वयं को भूलने लगते हैं। जाग्रत् परिजन यह प्रयास करें कि उनमें से एक भी व्यक्ति दिशा से भटकने न पाये, अभियान से पिछड़ने या बिछुड़ने न पाये। इसके लिए प्राणवान परिजनों ने गुरुपूर्णिमा से श्रावणी तक दो अभियान विशेष रूप से चलाने का क्रम बनाया है -

(क) - व्रतभंग प्रायश्चित्त- सभी को पता है कि छोटे-बड़े कार्यक्रमों, यज्ञों आदि में युगऋषि से दीक्षित नर-नारियों की संख्या कई करोड़ का आँकड़ा छू चुकी है। उन सभी को ईश्वर के साथ समर्थ साझेदारी के लिए; उपासना, साधना एवं आराधना के क्रम नियमित रूप से चलाने के लिए समयदान एवं अंशदान के संकल्प कराये गये हैं। यदि उन्हें न्यूनतम संकल्पों से डिगने न दिया जाय, क्रमशः प्रगति की दिशा में प्रेरित किया जा सके, तो उनके समयदान-अंशदान के सुनियोजन से बड़े-बड़े कार्य भी सहज ही पूरे किए जा सकते हैं। परन्तु उनमें बड़ी संख्या में लोग भटक या अटक गये हैं। एक प्रकार से उनकी दीक्षा का व्रतभंग हो गया है।

गुरुदेव को दिया हुआ वचन भंग करना एक भारी पातक माना जाता है। अपने किसी भी प्रियजन-परिजन को इस प्रकार जाने-अनजाने पातक का भागी नहीं बनने देना चाहिए।

मिशन की विभिन्न संगठित इकाइयों के प्राणवान परिजनों ने गुरुपर्व से श्रावणी तक विशेष रूप से ऐसे परिजनों को पुनः धारा में लाने का अभियान चलाने का क्रम बनाया है। इसे *'दीक्षा व्रतभंग प्रायश्चित्त'*कहा गया है। इसके चरण इस प्रकार हैं -

★ ऐसे व्यक्तियों को खोजकर उनसे सम्पर्क किया जाय। उन्हें हो रही चूक तथा उसको ठीक करने, हाथ आये सौभाग्य को खोने न देने के लिए प्रेरित किया जाय।

★ वे इस अवधि में किसी भी एक दिन *'प्रायश्चित्त दिवस'* मनायें। उस दिन आधे दिन मौन रहें। कम से कम १००० गायत्री मंत्र का अतिरिक्त जप करें। अब अपनी आस्था के अनुरूप दीक्षा के नियमों के पालन का संकल्प लें।

★ निर्धारित नियमों का स्मृति पत्र बनाकर अपनी उपासना स्थली पर रखें। उनमें कमी न आने दें। क्रमशः प्रगति का क्रम बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें।

यह अभियान निश्चित रूप से युगऋषि को हर्षित करेगा और क्षेत्र में एक नई ऊर्जा का संचार कर सकेगा।

(ख)- तेजस्विता संवर्धन साधना- युगऋषि के जन्मशताब्दी अभियान के क्रम में *'सृजन साधना महापुरश्चरण'* चालू किया गया था। उसके अंतर्गत नवसृजन अभियान से जुड़े व्यक्ति की गुणवत्ता, तेजस्विता वृद्धि के लिए विशेष **आत्म-साधना** करने की योजना भी रखी गई थी। उसके अंतर्गत १-'युग निर्माण सत्संकल्प' तथा २- 'अपने अंग अवयवों से' पत्रक के अनुसार अपनी समीक्षा करते हुए अपने आपको पहले से बेहतर सृजन सैनिक के रूप में युगऋषि के सम्मुख प्रस्तुत करने का लक्ष्य रखा गया था। परिजनों ने विगत दो वर्षों में इस दिशा में काफी कुछ प्रयास किए हैं और उनके सद्परिणाम भी सामने आये हैं।

गुरुपूर्णिमा से श्रावणी तक की एक माह की अवधि में परिजनों ने इस साधना को विशेष रूप से चलाने के लिए प्रयास शुरू कर दिये हैं। उसके क्रमिक चरण इस प्रकार हैं -

युग निर्माण सत्संकल्प के १८ सूत्र हैं। अंग अवयवों वाले पत्रक में १२ अनुच्छेद (पैराग्राफ) हैं। कुल मिलाकर १८+१२=३० हुए।

गुरुपूर्णिमा से श्रावणी तक ३० दिन होते हैं। परिजन गुरुसत्ता के सामने संकल्प करें कि हम स्वयं को पहले से बेहतर, सृजन साधक, सृजन सैनिक के रूप में आपके श्रीचरणों में समर्पित करेंगे। इसके लिए प्रतिदिन उक्त ३० सूत्रों में से एक सूत्र को लेकर आत्ममंथन करेंगे। उस सूत्र के अनुसार अपने चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार को श्रेष्ठतर बनाने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे। इस प्रकार ३० दिन में ३० सूत्रों को आत्मसात करते हुए एक नये तेजस्वी रूप में विकसित-समर्पित होंगे।

किसी को हमारा स्मारक बनाना हो तो वह वृक्ष लगाकर बनाया जा सकता है। वृक्ष जैसा उदार, सहिष्णु और शांत जीवन जीने की शिक्षा हमने पायी। उन्हीं जैसा जीवन-क्रम लोग अपना सकें तो बहुत है। हमारी प्रवृत्ति, जीवन विधा और मनोभूमि का परिचय वृक्षों से अधिक और कोई नहीं दे सकता। अतएव वे ही हमारे स्मारक हो सकते हैं।

*** पं. श्रीराम शर्मा आचार्य**

ध्यान साधना

कई प्राणवान परिजनों ने युगऋषि द्वारा कराये गये ध्यान 'त्रिवेणी संगम' का विशेष रूप से अध्ययन प्रारंभ कर दिया है। उसे अपने चित्त में बिठाकर तथा अपने प्रियजनों को उसका अभ्यास कराकर उक्त *'तेजस्विता संवर्धन साधना'* को बहुत प्रभावी बनाया जा सकता है।

अक्सर लोग ध्यान का कैसेट चालू करके उसे सुनते भर हैं। प्रशिक्षक के निर्देश केवल सुनने से कोई कुशल खिलाड़ी नहीं बन सकता। उसके एक-एक सूत्र को विचारों-भावनाओं में स्थान देते हुए उनका अभ्यास करना जरूरी होता है। ध्यान के बारे में गंभीर होकर प्रयोग करने की जरूरत है।

गुरुदेव ने अनेक तरह के ध्यान कराये हैं। वे सब अपने आप में अद्भुत-असाधारण हैं। लेकिन उनका अभ्यास ठीक से नहीं हो पा रहा है।

क्या करें? :- जिस ध्यान का अभ्यास करना है, उसे खाली समय में शांत चित्त से सुनें। एक-एक निर्देश को समझें तथा अपनी समीक्षा करें कि हमें उस स्तर की अनुभूति के लिए किस प्रकार प्रयास करने हैं। कुछ समय के चिंतन-मंथन के बाद वे भाव मन में बैठने लगते हैं। फिर ध्यान के समय निर्देश यदि न भी सुने जायें तो भी मन उन अनुभूतियों में स्वतः उतरने लगता है। सुनते हुए ध्यान करना सुगम लगे तो इस क्रम को बनाये रखा जा सकता है।

युगऋषि की जन्म शताब्दी के संदर्भ में उभरे स्वाभाविक उत्साह को यदि सुनियोजित किया जा सके, तो उससे आत्मिक प्रगति तथा लौकिक सफलताओं के नये द्वार साधकों के लिए खुल सकते हैं। हमें इस दिशा में नैष्ठिक प्रयास तत्परता पूर्व चालू रखने चाहिए।

देश के उज्ज्वल भविष्य का विश्वास जगा रहे हैं सृजनशील युवा

नगरवासियों के लिए प्रेरक बना नामी उद्योगपति का पर्यावरण प्रेम

भावनगर (गुजरात) : नगर विधायक जी ने गतवर्ष भावनगर में ११११ नीम के वृक्ष लगाये। वर्षा ऋतु के बाद सरकार द्वारा सरकारी ढंग से उन्हें टेंकर से सींचा जाने लगा। परिणाम स्वरूप पेड़ सूखने लगे। सूखते पेड़ों के साथ पर्यावरण प्रेमी श्री देवेन सेठ की जान भी सूखने लगी। तब उन्होंने निश्चय किया कि वे स्वयं पेड़ों में पानी देकर उन्हें जीवित रखेंगे।

श्री देवेन सेठ 'कायम चूर्ण' बनाने वाली सुप्रसिद्ध कम्पनी सेठ ब्रदर्स के मालिक हैं। वे जब घर से निकलते हैं तो अपनी कार में ५ और १० लीटर वाले १५-२० केन पानी से भरकर रख लेते हैं। फैक्टरी जाते समय वे उनके द्वारा पेड़ों को सींचते जाते हैं। फैक्टरी से लौटते समय भी यही कार्य करते हैं। दिन में औसतन दो बार उनका घर आना जाना होता है। इस बीच वे प्रतिदिन ८० पेड़ों की प्यास बुझाते हैं।

✹भावनगर को बैंगलोर की तरह हराभरा बनायेंगे
✹ऑफिस जाते-आते सींचते हैं प्रतिदिन ८० पौधे
✹इस कार्य में लगने वाले ९० मिनट वे अपने दैनिक व्यायाम के समय में से बचाते हैं।

श्री देवेन सेठ पौधों को पानी देते हुए

श्री देवेन सेठ बचपन से ही पर्यावरण प्रेमी हैं। उनका भावनगर को बैंगलोर की तरह हराभरा बनाने का सपना है। वे कहते हैं कि इस कार्य में ९० मिनट समय खर्च होता है, जिसे वे नियमित व्यायाम के क्रम में से कटौती कर पूरा करते हैं। उनका कहना है कि धन खर्च करके भी सिंचाई का यह कार्य कराया जा सकता है, लेकिन स्वयं सिंचाई करने से आवश्यक व्यायाम हो जाता है। इस कार्य में जो आनंद मिलता है, वह अनिर्वचनीय है। उन्हें स्वयं इस कार्य को करते देखकर नगर के कई युवा भी इस कार्य के प्रति उत्साहित हुए हैं और नगर में लगाये गये वृक्षों की सिंचाई करने लगे हैं। वृक्षारोपण तो अनगिनत लोग करते और भूल जाते हैं, लेकिन एक विभूति के अग्रगमन से वृक्षों को बचाने का जो आन्दोलन चल पड़ा है, वह प्रेरणादायी और उत्साहवर्धक है।

नेत्रावती नदी में सामूहिक श्रमदान से चला स्वच्छता अभियान

बैंगलोर (कर्नाटक)

गायत्री चेतना केन्द्र बैंगलोर ने धर्मस्थला नगर के मंजुनाथ स्वामी मंदिर व रामक्षेत्र तथा उजीरे ग्राम पंचायत में दिनांक २८ एवं २९ मई को सफाई अभियान चलाया। इसके अंतर्गत मंजुनाथ स्वामी के प्रवेश द्वार, ग्राम पंचायत धर्मस्थला, रामक्षेत्र परिसर और उजीरे ग्राम पंचायत के तिराहे की सफाई की गयी। सफाई अभियान में मैंगलोर, मुडिगिरे, बेल्गाम, बलकुंज आदि शाखाओं से आये लगभग २०० परिजनों ने भाग लिया। नेत्रावती नदी के अंदर और बाहर के क्षेत्र से ३० ट्रेक्टर ट्रॉली गंदे कपड़े आदि निकाले गये, घाटों की ब्रश से रगड़-रगड़ कर सफाई की गयी।

सफाई अभियान का समापन शाम को दीपयज्ञ के साथ हुआ, जिसका संचालन कन्नड़ भाषा में ही किया गया। रामक्षेत्र के स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती और मंजुनाथ स्वामी मंदिर के स्वामी जी, श्री वीरेन्द्र हेगड़े, समाजसेवी श्री कृष्णप्पा आदि वरिष्ठ जनों का सफाई अभियान में सहयोग मिला। श्री पीताम्बरा हजारे, श्री रुक्मय्या पुजारी, चितरंजन मोहन उज्जुरि श्री तुकाराम सात्यान ने अग्रणी सक्रियता अपनायी।

रक्तदान शिविर को मिली शानदार सफलता

रंभा, गंजाम (ओडिशा) : जन्मशताब्दी के रचनात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत गरीब व असहाय लोगों की सेवा करने के निमित्त गंजाम के परिजनों ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया। वे समय-समय पर युवाओं व सेवाभावी संस्थाओं के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन करते रहे हैं।

समाचार प्रेषक श्री गोकुलचन्द्र नाहाक के अनुसार रंभा गायत्री परिवार, ब्रह्मपुर मेडिकल कॉलेज, एम.के.सी.जी. मेडिकल कॉलेज व रेडक्रास ब्लड बैंक के सहयोग से चार बार रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा चुका है। शिविर से ३२५ युनिट रक्त संग्रह हुआ है, इसे जरूरतमंद एवं गरीब परिवार को निःशुल्क दिया जायेगा। कार्यक्रम को स्थानीय मीडिया ने खूब सराहते हुए प्रमुखता से प्रकाशित किया है।

ब्रह्मपुर के दैनिक संवाद के महाप्रबंधक श्री प्रसादराव, रंभा दुर्गामठ के श्री विवेकपुरी, श्री अशोक साहू, गंजाम पंचायत समिति अध्यक्ष-श्री सुरथ पाहान, पुलिस अधिकारी- श्री व्ही.एल.के. प्रसाद आदि के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर में युवाओं की विशेष भागीदारी रही।

सर्वश्री प्रज्ञाप्रसाद तथागत, संतोष आचारी, उमाकांत साहू, निरंजन पाणिग्रही आदि युवाओं ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की।

यज्ञभाव के साथ हुआ यज्ञशाला का लोकार्पण

गोहाना (हरियाणा) : २२ मई को नवनिर्मित यज्ञशाला का यज्ञ के साथ उद्घाटन हुआ। इस यज्ञशाला का निर्माण श्री ओमप्रकाश शर्मा, श्री हरिश्चन्द्र जी आदि की विशेष मेहनत से किया गया है। यज्ञशाला की बैठक क्षमता १२५ लोगों की है।

इस अवसर पर भिवानी के वरिष्ठ चिकित्सकों के सहयोग से निःशुल्क चिकित्सा शिविर में नगर के १५० लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। साथ ही उन्हें निःशुल्क औषधियाँ दी गयीं।

श्री जी. एस. कुशवाहा ने जन्मशताब्दी एवं गायत्री परिवार के रचनात्मक कार्यों की जानकारी दी। श्री साहब सिंह शर्मा, श्री नफे सिंह आदि की सराहनीय भूमिका रही।

युगनिर्माणी श्राद्ध विधान ने बढ़ाई श्रद्धा

श्राद्ध किया, बुराइयाँ त्यागीं

पुणे (महाराष्ट्र) : गायत्री साधना केन्द्र में अक्षय तृतीया के दिन सामूहिक श्राद्ध तर्पण किया गया। यह अनूठा कार्यक्रम शहर में पहली बार हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र श्री लखन राठौर ने कार्यक्रम का संचालन किया। उनकी मार्मिक टिप्पणियों ने पितरों के प्रति श्रद्धा बढ़ाई।

लोगों के तर्क, तथ्य एवं प्रमाण सहित व्याख्या से प्रभावित हो, इस क्रम को पितृपक्ष में सामूहिक श्राद्ध तर्पण नियमित रूप से करने का संकल्प लिया।

श्राद्ध कर्म में लोगों ने सिगरेट, तम्बाखू आदि व्यसन छोड़ने तथा अपने पूर्वजों की याद में एक-एक वृक्ष रोपने व उसका संरक्षण करने का संकल्प लिया।

युवा संगठन ने निकाली पर्यावरण जागरुकता रैली

नोएडा (उत्तर प्रदेश)

गायत्री चेतना केन्द्र नोएडा से सम्बद्ध युवा मण्डल ने पर्यावरण दिवस पर एक जनजागरण रैली निकाली और आर.डब्ल्यू.ए. के साथ मिलकर क्यू ब्लॉक स्थित पार्क में वृक्षारोपण किया। आर.डब्ल्यू.ए. के अध्यक्ष श्री योगेन्द्र सिंह ने भी युवा मण्डल के साथ मिलकर वृक्षारोपण किया। गणमान्य अतिथियों ने एक स्वर में गायत्री परिवार के इस अभियान की सराहना की। उन्होंने ऐसे उपयोगी और उत्साहपूर्ण कार्य में आगे भी सहयोग देते रहने का आश्वासन दिया। उपेक्षित पड़े स्थानीय पार्कों में वृक्षारोपण कर उन्हें हराभरा करने के सामूहिक संकल्प लिये गये।

पौधों के साथ रैली निकालते नवयुवक-युवतियाँ

पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर योग शिविर का आयोजन भी किया गया। मेधा त्यागी, संध्या, प्रतिभा, प्रियंका, उज्ज्वल आदि ने योग के साथ एक्यूप्रेशर के माध्यम से लोगों का उपचार किया। उन्होंने देसंविवि की गतिविधियों की जानकारी भी लोगों को दी। शिविर का समापन ५ जून को हुआ। इस अवसर पर वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर पावर पॉइण्ट प्रेजेण्टेशन प्रस्तुत किये गये, यज्ञ-संस्कार हुए।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौध वितरण

मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

विश्व पर्यावरण दिवस पर गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट, पर्यावरण मित्र समिति, नागरिक सुरक्षा संगठन एवं राष्ट्रीय स्वयं संघ ने संयुक्त रूप से दीप महायज्ञ सम्पन्न किया। आचार्य श्रीराम शर्मा उद्यान परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में पौधों का विधिवत् पूजन कर लोगों में वितरित किये गये तथा उन्हें संरक्षित करने का संकल्प कराया गया। प्रसाद स्वरूप में लोगों में तुलसी के पौधे एवं तुलसी के चमत्कारी गुण पुस्तक दिये गये। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मधु शर्मा, श्रीमती पूनम जौहरी की टोली द्वारा किया गया।

लोकप्रिय हो रहा है सामूहिक विवाह आन्दोलन

राठ, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) : राठ क्षेत्र में गायत्री परिवार द्वारा किये जा रहे सामूहिक आदर्श विवाहों से लोग काफी प्रभावित हो रहे हैं। वहाँ इसने एक सशक्त अभियान का रूप ले लिया है।

१० मई को ग्राम चण्डौत में ५ जोड़ों का आदर्श सामूहिक विवाह हुआ। १८ मई को १० तथा २१ मई को ३९ जोड़े ने यज्ञ भगवान की साक्षी में दाम्पत्य सूत्र में बंधे। इसी तरह २२ मई को १७ जोड़ों का आदर्श सामूहिक विवाह संस्कार सम्पन्न कराया गया।

नगर के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों सहित अनेक संभ्रान्त लोगों ने नवदम्पत्तियों को आवश्यक सामग्री भेंट की। इसमें कपड़े, आभूषण, बर्तन आदि प्रमुख हैं। गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी श्री चन्द्रशेखर मिश्र, डॉ. लक्ष्मण लाल त्रिपाठी आदि की प्रमुख भूमिका रही।

नवरात्रि पर्व की पूर्णाहुति के अवसर पर ५ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। श्रीमती रानी गुप्ता, सुश्री विमला गुप्ता, सुश्री आभा गोस्वामी एवं सुश्री ऊषा व्यास ने इसका संचालन किया। इस दौरान विभिन्न संस्कार बड़ी संख्या में सम्पन्न कराये गये।

नशामुक्ति प्रदर्शनी लगायी

बैतूल (मध्य प्रदेश)

बैतूल और बैतूलबाजार शाखा द्वारा संयुक्त रूप से प्रदर्शनी लगाकर ढेरों लोगों को नशा न करने की शपथ दिलाई गयी। यह प्रदर्शनी बस स्टैण्ड कोठी बाजार में लगायी गयी थी। जन जागरूकता लाने के लिए परिजनों ने पूज्य गुरुदेव का साहित्य भी बड़ी मात्रा में वितरित किया। डॉ. शैला मुळे, श्री डीडी उइके आदि ने लोगों को व्यसनमुक्ति के संकल्प दिलाये। प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने पाँच-पाँच लोगों को व्यसनमुक्त कराने के संकल्प लिये।

प्रतिदिन कम से कम एक बार खिल,खिलाकर जरूर हँस लेना चाहिए।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रति आकर्षित हो रहे हैं शिक्षण संस्थान

संस्कृतिनिष्ठ प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

पुणे (महाराष्ट्र)

केन्द्रीय प्रतिनिधि सर्वश्री कालीचरण शर्मा, शरद पारधी, अशोक ढोके, योगीराज बल्कि की उपस्थिति में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-२०१० में प्रावीण्य सूची में आये विद्यार्थियों का सम्मान समारोह हुआ।

इस अवसर पर जनपद स्तर पर ९५ प्रतिशत के साथ प्रथम आयी कु० सुप्रिया आगम तथा ९२ प्रतिशत के साथ द्वितीय आयीं कु० दर्शना गायकवाड़ को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। साथ ही प्रावीण्य सूची में आये विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र, नगद राशि से पुरस्कृत किया गया।

जन्मशताब्दी की पावन वेला में भारतीय संस्कृति से बच्चों को अवगत कराने एवं उन्हें सुसंस्कृत करने हेतु शिक्षकों का आवाहन किया। उपस्थित प्राचार्यों एवं शिक्षकों ने अपने-अपने विद्यालय एवं निकटस्थ विद्यालयों के अधिक-अधिक छात्र-छात्राओं को जोड़ने का संकल्प व्यक्त किया। इस निमित्त भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की अलग से टीम तैयार की गयी है।

ज्ञातव्य हो कि मुंढवा परिसर में प्रत्येक रविवार प्रात: यज्ञ करते हैं तथा बच्चों के जन्मदिवस संस्कार मनाये जाते हैं। बच्चों ने वृक्षारोपण करने तथा दीपावली में पटाखा नहीं फोड़ने का संकल्प लिया है।

उन्नाव (उत्तर प्रदेश)

उन्नाव जिले के ११७ विद्यालयों के १७५०० से अधिक विद्यार्थियों ने वर्ष २०१० की भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लिया। जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह २३ अप्रैल को गायत्री शक्तिपीठ कॉलेज रोड़ पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता उपजोन प्रमुख श्री रामचंद्र गुप्त ने की। श्री राज बहादुर चंदेल-विधान परिषद् उ.प्र. के सदस्य सामारोह के मुख्य अतिथि थे।

सम्मान समारोह में सभी कक्षाओं की प्रथम तीन वरीयता प्राप्त विभूतियों को प्रमाण पत्र, देव स्थापना चित्र, नकद राशि एवं सत्साहित्य देकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि एवं सभी संबंधित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों को प्रशस्ति पत्र, देवस्थापना चित्र एवं साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। सर्वाधिक छात्र संख्या वाले ५ विद्यालयों एवं शत प्रतिशत विद्यार्थी शामिल करने वाले एक विद्यालय को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

समारोह का संचालन परीक्षा सचिव श्री श्यामाचरण त्रिवेदी द्वारा किया गया। इसकी सफलता के लिए श्री सिद्धिनाथ श्रीवास्तव, श्री सत्येन्द्र गुप्ता, श्री रामगोपाल वाजपेयी आदि सभी परिजनों ने अथक श्रम किया।

राठ, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा २०१० की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में आये विद्यार्थियों का पुरस्कार वितरण समारोह २० अप्रैल को आयोजित हुआ। आँवलखेड़ा जोन के प्रभारी श्री पुरुषोत्तम दुबे ने समारोह की अध्यक्षता की।

जनपद स्तर पर अपने-अपने वर्ग में प्रथम आये चि० सुरजनसिंह, कु० प्रीति गुप्ता, चि० सुरेन्द्र कुमार, चि० विदुर कुमार, कु० स्मृति द्विवेदी, कु० स्मृति अग्रवाल, चि. सुमित कुमार तथा कु० सावित्री फैजेआम को नगद, स्मृति चिह्न एवं सत्साहित्य भेंट किये गये। साथ ही विशेष सहयोग करने वाले प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों को भी युग साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

झाँसी उपजोन के श्री जी.पी. शर्मा ने भासंज्ञाप के उद्देश्यों एवं विभिन्न संस्कारों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए सभी से बढ़-चढ़कर भागीदारी करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. लक्ष्मणलाल त्रिपाठी ने कार्यक्रम का संचालन तथा जिला संयोजक श्री चन्द्रशेखर मिश्र ने आभार प्रकट किया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2011 की
राज्यवार परीक्षा तिथियाँ

राज्य	परीक्षा तिथि	राज्य	परीक्षा तिथि
झारखण्ड--------	03 सितम्बर	उत्तर प्रदेश ----	24 सितम्बर
प० बंगाल ----	03 सितम्बर	हिमाचल प्रदेश -	01 अक्टूबर
राजस्थान -----	09 सितम्बर	तमिलनाडु -----	14 अक्टूबर
हरियाणा ------	09 सितम्बर	ओडिशा -------	22 अक्टूबर
छत्तीसगढ़ -----	17 सितम्बर	पंजाब ---------	19 नवम्बर
मध्य प्रदेश ----	17 सितम्बर	कर्नाटक -------	26 नवम्बर
महाराष्ट्र -------	17 सितम्बर	आंध्र प्रदेश ----	26 नवम्बर
गुजरात -------	24 सितम्बर	उत्तराखण्ड ----	26 नवम्बर
बिहार ---------	24 सितम्बर	दिल्ली --------	03 दिसम्बर

विरार, ठाणे (महाराष्ट्र)

दुर्गा महिला मण्डल ठाणे ने रॉयल एकेडमी हाईस्कूल में कार्यक्रम आयोजित कर कक्षा ५ से १०वीं के बच्चों को भारतीय संस्कृति की जानकारी दी। बच्चों अपनी दिनचर्या व्यवस्थित करने और जीवन को सही दिशा देने के सम्बंध में बड़े मार्मिक प्रश्न किये। उनकी जिज्ञासा में उज्ज्वल भविष्य की झाँकी दिखाई दी।

अनेक विद्यार्थियों ने गायत्री मंत्र जप करने, बुरी आदतों को छोड़ने आदि के संकल्प लिये। विद्यार्थियों का मार्गदर्शन डॉ. अशोक सिंह, एजी यादव, आरती साहू, आभा शर्मा, सुमित राजपुरोहित आदि ने की।

बाल संस्कार शिविर आयोजित हुए

इन्दौर (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ केशर बाग, इंदौर पर चल रहा बाल संस्कार शिविर

गायत्री शक्तिपीठ केसरबाग में बालकों का २४ से ३० अप्रैल तक तथा बालिकाओं का १३ से १७ मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। इसमें करीब १५० विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों को ध्यान, योग-व्यायाम, यज्ञ, संस्कार, महापुरुषों के जीवन चरित्र, नशा मुक्ति आदि विषय पर जानकारी दी गयी। बच्चों में जबरदस्त उत्साह देखा गया। समापन अवसर पर सभी को पूज्यवर का साहित्य भेंट करते हुए उनके मंगल जीवन और उज्ज्वल भविष्य की कामना की गयी।

साधना ने जगाया सफलता का विश्वास

विसनगर (गुजरात) की निवासी कु. श्रेया परमार पिछले तीन वर्षों सतत गायत्री मंत्र लेखन साधना कर रही है। इस वर्ष उसने १०वीं की परीक्षा दी, जिसमें उसे माँ की असीम कृपा की अनुभूति हुई।

कु. श्रेया एक बार तो समाज विज्ञान का प्रश्न पत्र देखकर घबरा गयी थी। तब उसने अपनी आराध्य माँ गायत्री को याद किया। याद करते ही न जाने कहाँ से आत्मविश्वास जागा कि वह फिर बिना रुके प्रश्न हल करती गयी। उसने उस विषय में १०० में से ९२ अंक प्राप्त किये।

'सौर ऊर्जा' विषय पर आयोजित हुई चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिताएँ

मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट मुरादाबाद द्वारा कैप्टन स्कूल में ७ मई को स्कूली विद्यार्थियों के लिए सौर ऊर्जा पर चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कक्षा ६ एवं ७ के विद्यार्थियों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया, जबकि कक्षा ८ एवं ९ के विद्यार्थियों ने ''सौर ऊर्जा का अर्थ एवं ऊर्जा संकट का सरल समाधान'' विषय पर निबंध प्रतियोगिता में भाग लिया। दोनों ही प्रतियोगिता के विजेताओं को कार्यक्रम के विशेष अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह चौहान, श्री बाबूराम भारद्वाज, श्री जयानंद सुयाल द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती उमा राजपूत ने की और संचालन श्री मधु शर्मा ने किया।

चित्रकला प्रतियोगिता में पुरस्कृत विद्यार्थी

हो रहा है गुरु-गरिमा का बोध

प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला में दिया युगचिंतन

उदयपुर (राजस्थान) : लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय उदयपुर पिछले ३९ वर्षों से अनवरत रूप से तिलक आसन व्याख्यानमाला आयोजित करता आ रहा है। प्रतिवर्ष लब्धप्रतिष्ठित शिक्षाविदों को इसमें आमंत्रित किया जाता है। परम पूज्य गुरुदेव के जन्मशताब्दी वर्ष में ९ मई को आयोजित व्याख्यान में महाविद्यालय प्रबंधन ने गायत्री परिवार के वरिष्ठ प्रतिनिधि राव सवाई श्री चंद्रवीर सिंह बिजौलियाँ को आमंत्रित किया था।

श्री बिजौलियाँ जी ने 'वर्तमान समय में मूल्यों का ह्रास एवं शिक्षक की भूमिका' विषय पर बोलते हुए कहा कि व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके चिंतन के अनुरूप ढलता है। शिक्षक कोई पेशा नहीं, एक धर्म है, जिस पर समाज और देश का भविष्य निर्भर है। जिन शिक्षकों की अपने धर्म के प्रति आस्था है और जिनकी संवेदनाएँ अपने समाज के प्रति जाग्रत् हैं, उन्हें अपने विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन ही नहीं, निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

सोनीपत (हरियाणा) : १५ मई को गायत्री शक्तिपीठ परिसर में एक दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। इसमें ५० शिक्षकों ने भागीदारी की।

प्रतिभागियों को शिक्षा-विद्या, भारतीय संस्कृति, शिक्षक राष्ट्र का निर्माता, राष्ट्रोत्थान में शिक्षकों का योगदान आदि विषयों में विस्तार से जानकारी दी गयी। शिक्षक की भूमिका, गरिमा, गौरव व युगधर्म की युगानुकुल विवेचना ने सभी को भाव विभोर कर दिया। सभी छात्र-छात्राओं के सम्पूर्ण विकास के लिए संकल्पित हुए। एक स्वर से सभी ने समाज, राष्ट्र के विकास में अपना हर संभव सहयोग करने की बात कही।

श्री एन.के. शर्मा ने शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक विचार को भारतीय संस्कृति का आधार बताया। इस अवसर पर डॉ. ओ.डी. शर्मा, श्री सत्यनारायण कौशिक, श्री विनोद गुप्ता, श्री जे.एस. कुशवाहा आदि ने भी विचार प्रकट किये।

देव संस्कृति का गौरव बढ़ाती प्रतिभाएँ

सौंसर, छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश)

चि. प्रणव

सौंसर के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री दामोदर बेण्डे के नाती चि. प्रणव ने आईआईटी जेईई की परीक्षा में अच्छे अंक हासिल करते हुए सफलता अर्जित की है और वहीं के कार्यकर्त्ता श्री हेमंत-सौ. प्राची बेण्डे के सुपुत्र चि. प्रज्वल ने महाराष्ट्र में सातवीं कक्षा में छात्रवृत्ति प्राप्त करने में सफलता पायी है। पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन में शानदार निष्ठा और उत्साह रखने वाले दोनों होनहार बालक पू.गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का विस्तार करना चाहते हैं।

चि. प्रज्वल

मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

स्थानीय सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री नरेन्द्र सिंह चौहान के पोते चि.करन सिंह ने आईसीएई. बोर्ड की परीक्षा में ९७.८ प्रतिशत अंक अर्जित करते हुए मुरादाबाद मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्हीं की पोती कु. शुभि ने सीबीएसई बोर्ड की १२वीं कक्षा में जनपद में छठा स्थान प्राप्त किया है।

कु. शुभि

अशिष्टता चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो, मानव जीवन का बहुत बड़ा कलंक है।

जन्म शताब्दी का संदेश पहुँचाती राष्ट्र जागरण तीर्थयात्राएँ

हर राज्य में जागी उज्ज्वल भविष्य की आस, युगशक्ति के प्रति बढ़ा विश्वास और नवसृजन का उल्लास

धरमजयगढ़, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

१२ मई को धरमजयगढ़ में शताब्दी रथ के पहुँचने पर उपजोन कोरबा के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री नेमूराम साहू, श्री रोहितास कसेर सहित सैकड़ों परिजनों ने भावभरा स्वागत किया। जगह-जगह स्वागत द्वार सजाये गये थे। वाहनों के काफिले के साथ रथ नगर भ्रमण करते हुए शक्तिपीठ पहुँचा, जहाँ दीप महायज्ञ के साथ हरिद्वार में होने वाले मुख्य कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी गयी। इस अवसर पर नैष्ठिक परिजनों और राष्ट्र के प्रति संवेदनशील महामनाओं ने युगऋषि की जन्म शताब्दी में अपनी भागीदारी के संकल्प लिये।

सत्प्रयासों को भावभरा नमन

नारायणपुर (छत्तीसगढ़)

शांतिकुंज से गयी जन्म शताब्दी तीर्थयात्रा २१ मई को नारायणपुर से भानुप्रतापपुर की तरफ रवाना हुई। अभी काफिले ने ७ किमी की दूरी ही तय की थी कि ६ युवा नक्सली मिले। पहली बार में वे ठीक से समझ नहीं पाये, सो धर्म के प्रति आम मान्यता के अनुरूप रथ को रोकते और टोली को धमकाते दिखाई दिये। जब उन्होंने यात्रा का पूरा उद्देश्य बताया गया और बाँटे जाने वाले पर्चे-पम्पलेट दिये गये तो सहज ही उनकी आस्था जाग उठी। जन-जन को मानवता का पाठ पढ़ाने वाले, हर वर्ग में एकता-समता और सद्भावना जगाने वाले युगऋषि के प्रयासों से भला उन्हें क्या विरोध हो सकता था।

नक्सलियों ने पूरी श्रद्धा और सम्मान के साथ प्रसाद ग्रहण किया। इतना ही नहीं, उन्होंने आगे तक का मार्ग भी निर्बाध रूप से पूरा हो सके ऐसी व्यवस्था कर दी थी। उल्लेखनीय है कि २१ मई को पूरे छत्तीसगढ़ बंद का आह्वान किया गया था।

'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' के स्वर गूँजे

भानुप्रतापपुर, कांकेर (छत्तीसगढ़)

समाचार प्रेषक श्री हरीश लोचन ठाकुर के अनुसार २१ मई को जन्म शताब्दी रथ नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरते हुए गायत्री मंदिर पहुँचा। वहाँ केन्द्रीय टोली ने तमाम दुविधाओं को छोड़कर मानव जाति का नया भाग्य लिखने वाले इस दैवी अभियान में उत्साहपूर्वक भागीदारी करने का वातावरण बनाया। टोली नायक ने कहा कि आज राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए अनेकानेक आन्दोलन चल पड़े हैं, लेकिन उन सबकी सफलता का मूल मंत्र है युगऋषि का दिया सूत्र 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' को चरितार्थ करना। अनेक युवाओं ने मुख्य कार्यक्रम हेतु समयदान करने और सृजन आन्दोलनों को गति देने का संकल्प लिया।

कसडोल, रायपुर (छत्तीसगढ़)

२५ मई को यात्रा कसडोल पहुँची। वहाँ नगर के प्रतिष्ठित व्यवसायियों, शिक्षाविदों, अधिकारियों ने भव्य स्वागत किया। नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए शताब्दी तीर्थयात्रा रथ गायत्री शक्तिपीठ पहुँचा। वहाँ हुई सभा में अनेक युवाओं, व्यवसायियों ने समयदान व अंशदान करने के संकल्प लिये। उनमें श्री सियाराम साहू, श्री कुंदन श्रीवास, श्री झाडूराम देवांगन आदि की प्रमुख भूमिका रही।

रायपुर (छत्तीसगढ़)

राजधानी रायपुर क्षेत्र में २६ मई को जन्म शताब्दी रथ का आगमन हुआ। वहाँ केबीनेट मंत्री श्री चन्द्रशेखर साहू, महापौर डॉ. किरणमयी नायक, सांसद श्री रमेश बैस, विधायक- श्री देवजीभाई पटेल, औद्योगिक निगम के आयुक्त श्री गणेशशंकर मिश्र सहित अनेक वरिष्ठ प्रशासनिक-पुलिस अधिकारी आदि ने रथ की अगुवानी की। शहर में जगह-जगह विभिन्न धर्म-सम्प्रदाय के लोगों ने भी जन्म शताब्दी रथ का भव्य स्वागत किया। ३० कार और ५१ मोटर साइकिलों के साथ नगर भ्रमण करते हुए पूरा काफिला गायत्री शक्तिपीठ समता कालोनी पहुँचा।

सायंकाल गायत्री शक्तिपीठ समता कालोनी में भव्य दीपमहायज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री घनश्याम देवांगन की केन्द्रीय टोली ने जन्म शताब्दी कार्यक्रम तथा युग निर्माण आन्दोलन की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक फैलाने एवं हरिद्वार में होने वाले मुख्य कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भागीदारी करते हुए गायत्री परिवार के युग निर्माण आन्दोलन को बल प्रदान करने का आह्वान जन-जन से किया। मुख्य ट्रस्टी श्री श्याम बैस, श्री अरुण मढ़रिया आदि ने व्यवस्था संभाली।

नागदा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

डॉ. शीला ओझा के अनुसार ५ अप्रैल को नगर में जन्म शताब्दी रथ के पहुँचने पर लोगों अपार उल्लास और ऋषियुग्म के प्रत्यक्ष पधारने जैसी अनुभूतियों के साथ जन्म शताब्दी रथ का स्वागत किया। जगह-जगह पुष्पवर्षा और आरती के लिए लागों खड़े दिखाई दिये। स्वागत करने वालों में स्थानीय विधायक श्री दिलीप सिंह गुर्जर, श्री बालेश्वर दयाल, वरिष्ठ पार्षद- श्री राजेश धाकड़ आदि प्रमुख थे।

रथ जवाहर मार्ग, एमजी रोड, रामसहाय मार्ग, बस स्टैण्ड होते हुए गायत्री शक्तिपीठ पर आकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गया। श्री सत्यनारायण चतुर्वेदी ने कहा कि आचार्यश्री के मार्ग पर चलते हुए बुराइयों को त्यागने से ही अखण्ड भारत व उन्नत राष्ट्र एवं सभ्य समाज का निर्माण होगा।

राऊरकेला (ओडिशा)

५ जून को जन्म शताब्दी रथ के पानपुर चौक राऊरकेला पहुँचा। समाचार प्रेषक श्री राममोहन साहू के अनुसार शहर के अनेक शिक्षाविद्, बीएसएनएल के अधिकारी, व्यवसायी सहित सैकड़ों परिजनों ने रथ का भव्य स्वागत और ऋषियुग्म की चरण पादुकाओं का किया। छोटे-बड़े १०८ वाहनों के काफिला के साथ रथ बीएसएनएल खण्ड चौक, सेक्टर-७, १३, १६, १७ होते हुए गायत्री शक्तिपीठ पहुँचा।

सायं दीप महायज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें जन्म शताब्दी महोत्सव के लिए समयदान व अंशदान करने का भारी उत्साह युवाओं और अन्य परिजनों में उभरा। सर्वश्री रविनारायण पण्डा, विष्णु प्रसाद, नित्यानंद दास, विनोद रजक, सुश्री प्रज्ञा मिश्रा आदि की सराहनीय भूमिका रही।

मुख्यमंत्री ने की अगुवानी

सर्वश्री सुखदेव शर्मा एवं श्री वी.सी. पंत के नेतृत्व में देवभूमि उत्तराखण्ड, हिमाचल व जम्मू कश्मीर क्षेत्र में युगचेतना विस्तार के लिए गयी जन्म शताब्दी रथयात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत किया जा रहा है। समाचार लिखे जाने तक लगभग ५० से अधिक स्थानों स्वागत समारोह, सभाएँ, दीपयज्ञ आदि सम्पन्न हो चुके थे।

रथ के शिमला पहुँचने पर मुख्यमंत्री श्री प्रेमकुमार धूमल अगुवानी के लिए पहुँचे। माननीय मुख्यमंत्री ने पूज्य गुरुदेव-प.वंदनीया माता जी की चरण पादुकाओं की आरती की तथा परिजनों से बढ़-चढ़कर सहयोग करने की बात कही। उन्होंने कहा कि समूची जनता गायत्री परिवार की ओर आशा भरी दृष्टि से देख रही है, ताकि विश्वपटल में पुनः भारत को जगद्गुरु की आसंदी में बिठाया जा सके। परिजनों में गायत्री परिवार के समाजोत्थान के कार्यों के प्रति अंशदान व समयदान देने का संकल्प जताया।

शिमला में जन्म शताब्दी रथ का भावभरा स्वागत करते नगरवासी और मंच पर टोली के साथ विराजमान मुख्यमंत्री धुमल व अन्य गणमान्य

गुड़ामालानी, बाड़मेर (राजस्थान)

जन्मशताब्दी रथ का गायत्री शक्तिपीठ गुड़ामालानी पहुँचने पर एसडीएम. श्रीमती विनीता सिंह ने तहसीलदार श्री सुनील कटेवा, मीडियाकर्मी, अभियंताओं, चिकित्सकों एवं अनेक गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में पूजा-अर्चना कर स्वागत किया। दोपहरकालीन गोष्ठी में केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री आर.सी. गुप्ता ने 'पूज्य गुरुदेव एवं जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम तथा हमारे दायित्व' विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। सभी ने जन्म शताब्दी महोत्सव में बढ़-चढ़कर सहयोग करने का संकल्प लिया।

राँची (झारखण्ड)

शांतिकुंज के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्र जागरण तीर्थयात्रा का रथ झारखंड के विभिन्न जिलों से होता हुआ १७ मई को राँची पहुँचा। उपजोन कार्यालय, गायत्री शक्तिपीठ, सेक्टर-२, धुर्वा से श्री एन.एन. पाण्डेय, ऊर्जा सचिव के द्वारा पूजन के साथ यात्रा का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर व्यसन मुक्ति आन्दोलन प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी।

यात्रा में लाल मशाल के झण्डे बैनर तथा स्टीकरों से सुसज्जित लगभग १०० मोटर गाड़ी और ५० मोटर साइकिलें शामिल थीं।

राँची की महिला मंडल की संगीत टोली की बहनों ने यात्रा-क्रम में प्रेरक युग संगीत प्रस्तुत किया। प्रारंभिक उद्बोधन में श्री पाण्डेय ने यह विश्वास व्यक्त किया कि गायत्री परिवार के नेतृत्व में युग का परिवर्त्तन होना सुनिश्चित है।

दोपहर १२ बजे यात्रा टाउन हॉल पहुँची। वहाँ टोली नायक ने इस यात्रा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लोगों को इस शताब्दी वर्ष के विषय में जानकारी दी और बढ़-चढ़ कर आगे आने, लोकहित में समर्पित होकर काम करने के लिए प्रेरित किया।

दोपहर बाद २.३० बजे कचहरी चौक, रातू रोड़ होते हुए रथ गुरुद्वारा पहुँचा। वहाँ के भाइयों द्वारा रथ का भव्य स्वागत हुआ। फिर बाईपास रोड़, हरमू होते हुए अरगोड़ा पहुँचकर विशाल दीप यज्ञ के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस यात्रा में बड़ी संख्या में जनसाधारण के अतिरिक्त गणमान्य लोग भी उपस्थित थे। मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के गायत्री परिवार के लक्ष्य को सभी ने सराहा और स्वीकारा। श्री सी.पी.सिंह, विधान सभा अध्यक्ष ने इस लक्ष्य की चर्चा करते हुए कहा कि युगावतार पं. श्रीराम शर्मा आचार्य व्यक्ति नहीं, विचार हैं-क्रान्ति हैं। धरती पर इनका अवतरण विश्व संस्कृति में क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर इसे देव-संस्कृति में बदलने के लिए ही हुआ है।

सिन्दरी (झारखण्ड)

झारखण्ड राज्य में जन्म शताब्दी तीर्थ यात्रा का प्रारंभ १७ अप्रैल २०११ को प्रारंभ हुआ। गुरुदेव की अनुकम्पा से सर्वप्रथम सिन्दरी शक्तिपीठ को ही यह अवसर मिला।

यहाँ पर दिनांक-१७ से २० अप्रैल २०११ तक यह यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गयी। इन चार दिनों में सिन्दरी के आस पास के गाँवों एवं शहर के प्रत्येक मुहल्ले में श्रद्धारथ को घुमाया गया। परिजनों की उपस्थिति उत्साहजनक थी। यहाँ के सभी लोग सुबह ८.३० बजे से संध्या ८.०० बजे तक यात्रा में भाग लेते थे। स्थानीय परिजनों के कई निजी वाहन भी ज्ञान रथ के साथ चल रहे थे।

प्रतिदिन पड़ाव पर गायत्री दीप महायज्ञ के साथ कार्यक्रम का समापन किया जाता था। यह क्रम प्रत्येक दिन चलता रहा। युग संगीत एवं युग संदेश से लोगों में कुछ कर गुजरने की ललक जाग उठी। उनमें काफी उत्साह देखा गया। इस यात्रा के साथ चल रहे भाइयों के लिए भोजन की उचित व्यवस्था रखी गई थी।

इस सफल यात्रा से पूज्य गुरुदेव के विचारों को हर जगह लोगों के बीच सम्प्रेषित किया गया, जिससे लोगों में युग जागृति की लहर देखी गयी। इस प्रकार गायत्री परिवार के कार्य को समाज के हर वर्ग में बेहद पसन्द किया गया।

सहानुभूति एक शक्ति है-एक सम्बल है, जिससे मानवता के हितों की रक्षा होती है।

भावी पीढ़ी के नवनिर्माण के सशक्त आधार युग साहित्य और ऋषिचिंतन का विस्तार

सेण्ट्रल जेल में साहित्य स्थापना

शिमला (हिमाचल प्रदेश)

११ अप्रैल को शिमला के सेण्ट्रल जेल कण्डा घणाहरी में स्थानीय गायत्री परिवार एवं जेल प्रशासन के सहयोग से पूज्यवर के साहित्यों की स्थापना की गयी। कैदियों को रचनात्मक कार्यों के साथ गायत्री मंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित किया गया।

श्री वी. के. भटनागर सेवानिवृत्त आईएएस ने बताया कि गायत्री मंत्र के जप से लेखन से ज्यादा ऊर्जा मिलती है। इसलिए गायत्री परिवार जन्मशताब्दी गायत्री मंत्र लेखन का विशेष अभियान चला रहा है। इसमें भागीदारी करने से तन, मन शुद्ध होता है। श्रेष्ठ विचारों को ग्रहण करने की शक्ति प्राप्त होती है। श्री संजय शर्मा ने मिशन की प्रगतिशील विचारधारा से अवगत कराया।

कार्यक्रम से प्रभावित हो कैदियों ने इस तरह कार्यक्रम बार-बार करने की प्रार्थना की। श्री जे०आर० शर्मा ने अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना एवं प्रज्ञा अभियान पाक्षिक के अंक एक वर्ष तक नियमित रूप से देने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को स्थानीय मीडिया ने खूब सराहते हुए प्रमुखता से प्रकाशित किया।

विद्यालय में वाङ्मय स्थापना

राजपुर, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश)

रा.व.मा. विद्यालय राजपुर में तीन कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ परम पूज्य गुरुदेव के समस्त वाङ्मय साहित्य की स्थापना हुई। भवरना शाखा के परिजन श्री हेमंत पाराशर एवं श्री अजीत सिंह राणा ने यज्ञ संचालन करते हुए विद्यार्थियों

वाङ्मय स्थापना के अवसर पर यज्ञ करते विद्यार्थी

को बताया कि सतत सुविचारों के चिंतन से ही व्यक्तित्व को विभूषित करने वाले संस्कारों की स्थापना होती है। महापुरुषों के व्यक्तित्व आकर्षित तो सभी को करते हैं, लेकिन जो उनके जैसा बनना चाहते हैं, उन्हें उनके विचारों का स्वाध्याय नियमित रूप से करना चाहिए। यज्ञ संचालकों ने पूज्य गुरुदेव के महान व्यक्तित्व और यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप का परिचय भी विद्यार्थियों को कराया।

साहित्य विक्रय केन्द्र का उद्घाटन

रंभा, गंजाम (ओडिशा)

रामनवमी के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ परिसर में ५ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ हुआ। विभिन्न संस्कार सम्पन्न कराये गये। इसमें दो सौ से अधिक परिजनों की भागीदारी हुई।

पावन जन्मशताब्दी की वेला में क्षेत्रों में पूज्यवर के साहित्य को पहुँचाने के संकल्प के साथ शक्तिपीठ में साहित्य विक्रय केन्द्र का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर बी.डी.ओ. श्री रइनु सिंह ने वर्तमान समय में साहित्य की आवश्यकता पर बल देते हुए इसका विस्तार करने में अपना सहयोग करने की बात कही। विक्रय केन्द्र की शुरुआत करने में श्री नरसिंह सुबुद्धि का विशेष आर्थिक सहयोग रहा।

रंभा में साहित्य विक्रय केन्द्र का उद्घाटन

पुस्तक मेले का उत्साहवर्धक आयोजन

महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) : ७ से १४ मई की तिथियों में यादव धर्मशाला महेन्द्रगण में विराट् पुस्तक मेला का आयोजन हुआ। संत स्वामी शारदानंद ने दीप प्रज्वलित कर मेला का शुभारंभ किया। श्री दीपक नन्दी जी के आर्थिक सहयोग से लोगों को आधी कीमत में साहित्य उपलब्ध कराया गया। लोग जन्मशताब्दी की पूर्व वेला में लगाये गये इस साहित्य मेला से बड़ी संख्या में साहित्य खरीदकर ले गये। इसमें युवाओं एवं महिलाओं का उत्साह अधिक देखा गया।

प्रथम प्रयास की सफलता से स्थानीय परिजनों में विशेष उत्साह जागा। परिणामस्वरूप आयोजकों ने जुलाई माह में रोहतक तथा अगस्त माह में गोहना में पुस्तक मेले लगाने का संकल्प लिया। डॉ. गुरुदत्त अनेजा, श्री पृथ्वी सिंह, श्री बद्री प्रसाद गुप्ता आदि का सराहनीय योगदान रहा।

युवाओं ने सीखे व्यक्तित्व निर्माण के गुर

जाँजगीर-चांपा (छत्तीसगढ़)

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ द्वारा २० से २७ मई तक प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर एवं व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर का कार्यक्रम जांजगीर के कुष्ठ आश्रम में सम्पन्न हुआ। शिविर में प्रदेश भर से चयनित ५० प्रशिक्षकों ने तथा ३६ गाँव के ८० युवा शिवरार्थी ने भागीदारी की।

शिविर का शुभारंभ करते हुए छ.ग.विधान सभा उपाध्यक्ष श्री नारायण चंदेलने कहा कि पूज्य आचार्य जी द्वारा सुझाये गये विधाओं के अनुसार पर किये गये व्यक्ति निर्माण से ही सच्ची अर्थो में युवाओं का व्यक्तित्व विकास हो सकता है। प्रशिक्षण से ही प्रतिभा में निखार आता है तथा वरिष्ठों, विद्वानों के मागदर्शन से जीवन की सही दिशा तय करने में मदद मिलती है। उन्होंने नियमित रूप से प्रशिक्षण चलाते रहने की बात की।

शिविर में व्यक्तित्व के सूत्र, सफल जीवन की दिशाधारा, कर्मफल का सिद्धांत, गायत्री का महाविज्ञान, ब्रह्मचर्य के लाभ, बाल संस्कार शाला, व्यसन मुक्ति आन्दोलन, स्वावलम्बन, युग निर्माण योजना का परिचय एवं योग व्यायाम जैसे उपयोगी विषयों का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया ।

शिविर के समापन अवसर पर सांसद श्रीमती कमला पाटले अपने सहयोगियों के साथ पहुंची। उन्होंने अनेक मार्मिक उदाहरणों के माध्यम से युवाओं का उत्साह बढाते हुए उन्हें देश का कर्णधार बताया। युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौर ने कहा कि सेवा की भावना व्यक्तित्व निर्माण में अहम भूमिका निभाती है सेवा से ही व्यक्ति का अहंकार गलता है और शिष्टता एवं विनम्रता का विकास होता है।

प्रतिभागियों को डॉ. कुंती साहू एवं श्री प्राणेश भाई ने विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया। प्रत्येक प्रशिक्षार्थियों को मंच से प्रस्तुतीकरण करने का अवसर दिया गया। प्रशिक्षण के पश्चात बिलासपुर, कोरबा, राजिम, पत्थलगांव, धमतरी, राजनांदगांव आदि क्षेत्रों के लिए प्रशिक्षक टोली का गठन किया गया।

समापन के अवसर पर अध्यक्ष नि:शक्तजन कल्याण विभाग-श्री बलीहार सिंह, कुष्ठ आश्रम के प्रभारी श्री शर्मा जी, सचिव श्री सुधीर जी सहित अनेक लोग उपस्थित थे। शिविर व्यवस्था में सर्वश्री सुन्दर कश्यप, मलयज राठौर, रामकुमार राठौर, सुरेन्द्र गुप्ता, योगेश साहू आदि विशेष की भूमिका रही।

युवा शिविर मार्गदर्शिका प्रकाशित

प्रांतीय युवा संगठन ने ६ दिवसीय व्यक्तित्व निर्माण आवासीय युवा शिविर की एक मार्गदर्शक पुस्तिका भी प्रकाशित की है। दिनांक २१ मई को प्रस्तुत शिविर में छ.ग. विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री नारायण चंदेल द्वारा इसका विमोचन किया गया। इसमें शिविर आयोजित करने के पूर्व की तैयारी, शिविर के दौरान पढ़ाये जाने विषयों का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण, शिविर के बाद अनुयाज के तहत किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी गई है। साथ ही युवा शक्ति के आह्वान से लेकर युग निर्माण आन्दोलन में युवाशक्ति के सुनियोजन हेतु व्यावहारिक सूत्र दिये गये हैं।

पुस्तक मेलों से बिहार में हुआ नवचेतना का संचार

जमालपुर (बिहार)

गायत्री शक्ति पीठ, जमालपुर द्वारा पाँच-पाँच दिन की पुस्तक मेला शृंखला आयोजित की गयी। ये पुस्तक मेले फूला डूभर, शंभूगंज, इस्माइलपुर, बेलहर सुल्तानगंज, एन. टी. पी. सी. कहलगाँव, योग विद्यालय, विक्रमशिला कॉलोनी कहलगाँव, संग्रामपुर, सन्हौला(भागलपुर), जगदीशपुर, मुंगेर, जमालपुर और बाँका में लगाये गये। इन पुस्तक मेलों में आम आदमी से लेकर उच्च शिक्षित वर्ग के विद्वानों ने रुचिपूर्वक भाग लिया।

जहानाबाद (बिहार)

स्थानीय शक्तिपीठ द्वारा स्वामी सहजानन्द संग्रहालय कोर्ट एरिया में २३ मार्च से १ अप्रैल तक पुस्तक मेला लगाया गया। इसका उद्घाटन जहानाबाद की जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुश्री गीता वर्मा द्वारा किया गया। मेले को देखकर उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव को ज्ञान का सागर बताया। इसमें लगभग दो लाख मूल्य के साहित्य एवं अन्य सामग्रियों की खरीदारी जन सामान्य द्वारा की गयी।

शताब्दी मंत्र लेखन साधना के विशिष्ट अभियान

भिलाई, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

गायत्री शक्तिपीठ सेक्टर ६ ने जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में चल रहे विशेष गायत्री मंत्र लेखन अभियान के अंतर्गत ५००० पुस्तिकाएँ लिखाने का संकल्प लिया है। महिला मण्डल सेक्टर ३ की कार्यवाहक श्रीमती किरन चतुर्वेदी का अभियान में अहम योगदान रहा, जिन्होंने जाति-धर्म, वर्ग के भेद से ऊपर उठकर हर घर तक अपना संदेश पहुँचाया। परिणाम स्वरूप तमाम वर्गों ने न केवल मंत्र अभियान में भाग लिया, बल्कि नवयुग की स्थापना में अपने इस योगदान को जीवन का सौभाग्य कहा। सुश्री नूरजहाँ खान भी उनमें से एक थी। महिला मण्डल ने अप्रैल माह में ही ४२०० मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ वितरित कर दी थीं और एक हजार से अधिक संकल्प पत्र अनुदान सहित प्राप्त हो चुके थे।

कामठी, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रज्ञा काली विवेकानंद नगर कामठी के प्रयासों से ३०० लोगों ने शताब्दी मंत्र लेखन साधना का ४० दिवसीय अनुष्ठान सम्पन्न किया। रामनवमी के दिन तीन कुण्डीय यज्ञ के साथ साधकों ने अपने अनुष्ठान की पूर्णाहुति की। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव के विचारों के विस्तार और उनके सृजनात्मक कार्यों में क्रियान्वयन के संकल्प लिये गये।

वर्षभर का सघन प्रयाज बना सफलता का आधार

इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) : जिला गायत्री परिवार ट्रस्ट इलाहाबाद ने मंत्र लेखन अभियान के प्रथम चरण में लगभग ५०० लोगों से गायत्री मंत्र लेखन साधना कराने में सफलता पायी। सभी साधकों ने मंत्र लेखन के साथ जन्म शताब्दी में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए संकल्प पुष्पांजलि भी शांतिकुंज भेजी है।

जिला समन्वयक समिति के श्री उमाशंकर शुक्ल के अनुसार यह मंत्र लेखन साधना अभियान की सफलता ट्रस्ट द्वारा जन्म शताब्दी वर्ष के प्रयाज में चलाये गये जनसंपर्क अभियान एवं राष्ट्र जागरण प्रधान विविध कार्यक्रमों के लिए किये गये अथक पुरुषार्थ का सत्परिणाम थी। ट्रस्ट द्वारा पूरे वर्ष व्यसनमुक्ति एवं अन्य कुरीतियों के निवारण के लिए सघन जनसंपर्क अभियान चलाया गया था। नैनी, तिकोनिया पार्क, रसूलाबाद, मेहदोरी कॉलोनी, तेलियरगंज, लूकरगंज,बनीगंज, कालाडांडा, खुलदाबाद, हिम्मतगंज, प्रीतम नगर, धूमनगंज, सुलेमसराय आदि नगर की तमाम कॉलोनियों में जाकर कार्यकर्त्ताओं ने हर घर पर दस्तक दी और साहित्य, पम्पलेट आदि के माध्यम से युगऋषि का संदेश पहुँचाया। राष्ट्र जागरण अभियान के अंतर्गत मुक्ताविहार पार्क नैनी, शिवकुटी, कालिंदीपुरम्, प्रीतमनगर आदि में यज्ञ, दीपयज्ञ, प्रज्ञापुराण आदि के माध्यम से विशाल सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किये। राष्ट्र जागरण अभियान में गायत्री परिवार ट्रस्ट इलाहाबाद ने कई स्थानों पर पुस्तक मेले भी लगाये थे।

युग चिंतन को जनजीवन में प्रवेश कराने के लिए हुए प्रखर प्रयास

महानगरों में युवा रक्त ने थामी लाल मशाल

रेलवे स्टेशन पर व्यसनमुक्ति जनसंपर्क अभियान चलाया

दादर, मुंबई (महाराष्ट्र)

गायत्री परिवार मुम्बई की दादर, नवी मुंबई, नेवी नगर, कांदिवली, दहिसर, साकीनाका, उल्लासनगर, ठाणे आदि शाखाओं ने ३१ मई-अंतर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस पर दादर रेलवे स्टेशन पर जोरदार जनसंपर्क अभियान चलाया। यह अभियान यूथ फोर्स ऑफ बेटर इंडिया (वायएफबीआई) के साथ मिलकर श्री हरित पंचाल और श्री कृष्ण मिश्रा के नेतृत्व में चलाया गया। तीन घंटे के जनसंपर्क अभियान में ५० पोस्टर प्रदर्शित किये गये और पूज्य गुरुदेव का साहित्य यात्रियों में वितरित किया गया।

दादर रेलवे स्टेशन पर दिया नौजवानों ने ऐसे चलाया अभियान

अनेक लोगों ने खुलकर अपनी तकलीफों की चर्चा की। गायत्री परिवार की युवा टोली ने उन्हें गंभीरता से सुना और हर संभव सहायता की। उन्हें सतत

प्रचार टोली में डॉ. वरुण सहित कई चिकित्सक भी शामिल थे। उन्होंने आकर्षित होने वाले लोगों को नशे के खतरों से अवगत कराया। मार्गदर्शन का आश्वासन देते हुए गायत्री उपासना करने के लिए प्रेरित किया गया और व्यसनमुक्ति के लिखित संकल्प भी कराये गये।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में दीपयज्ञ के साथ गतिशील आन्दोलन

नोएडा (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)

गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा से जुड़े प्रज्ञा युवा मण्डल ने 'ए' ब्लॉक, सेक्टर ५६ के सनातन धर्म मंदिर स्थित पार्क में दीपयज्ञ का आयोजन कराते हुए पुनर्जीवन की आवश्यकता बतायी। गायत्री महामंत्र, रुद्र गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मंत्र के साथ सभी के सुखी जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना से भाव-आहुतियाँ समर्पित की गयीं।

वाहनों पर स्टिकर लगाते और रैली से सृजन आन्दोलनों का उद्‌घोष करते दिल्ली के नवयुवक

अपनी सृजनात्मक गतिविधियों से सैकड़ों लोगों को परिचित कराया। इस अवसर पर व्यसनमुक्ति रैली भी निकाली गयी। ३ से ४ घण्टे चली रैली में विवेक, नीरज, नीटू, योगेन्द्र, अभिषेक, अविनाश, विभूति भूषण आदि ने जनमानस पर गहरी छाप छोड़ी।

दीपयज्ञ का संचालन चेतना केन्द्र की महिला मण्डल प्रमुख श्रीमती मीना दीक्षित ने किया। इस अवसर पर उन्होंने मिशन के सप्त आन्दोलनों की जानकारी दी। संस्कार परंपरा को उत्कृष्ट व्यक्तित्व एवं सुखी परिवार का आधार बताते हुए उसके

युवा मण्डल के नीटू राघव, डौली वर्मा, आशीष शर्मा, रंजना शर्मा आदि ने उनके मण्डल द्वारा चलायी जा रही विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों की जानकारी देते हुए उनमें सक्रिय सहयोग करने का आवाहन श्रोताओं से किया। उल्लेखनीय है कि यह युवा मण्डल अनाथालय में जाकर वहाँ के बच्चों को प्यार और प्रोत्साहन देता है। मण्डल द्वारा बाल संस्कार शाला भी चलाई जाती है। युवकों ने विगत दिनों उनके द्वारा चलाये गये वृक्षारोपण, स्टीकर अभियान आदि की जानकारी भी दी।

यज्ञ आन्दोलन से युगनिर्माणी उमंगों का विस्तार

वनवासी क्षेत्र में

कट्ठीवाड़ा, अलीराजपुर (मध्य प्रदेश)

निमाड़ का कश्मीर माने जाने वाले पर्वतीय आदिवासी अंचल कट्ठीवाड़ा में १६ एवं १७ मई को पंच कुण्डीय यज्ञ और दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसने अनेक लोगों के जीवन को नयी दिशा दी। कार्यक्रम संयोजक श्री रायसिंह सूर्यवंशी पूज्य गुरुदेव के मिशन से प्रभावित थे और सक्रिय भागीदारी करना चाहते थे। उन्होंने इस यज्ञ में दीक्षा लेकर तीन माह का समयदान करने की घोषणा की।

कार्यक्रम का शुभारंभ ढोल-मांदल की धुन के साथ उमड़ी जनआस्था सहित भव्य कलश यात्रा से हुआ। यज्ञ स्थल पर पहुँचकर यह एक सभा में बदल गयी। यहीं रात्रिकालीन दीपयज्ञ हुआ। निमाड़ के विभिन्न गाँवों में वनवासियों के जीवन को बदलने वाली डेमनिया भाई की भतीजी रूसीलाबेन की टोली ने अपने सुमधुर गीत और ओजस्वी वक्तव्य से श्रोताओं को देर रात तक मंत्रमुग्ध रखा।

दीपयज्ञ का दृश्य बड़ा सुहावना था। नभ में झिलमिलाते तारों की सुंदरता में पहाड़ी पर जलती दीपमालाओं की दिव्यता चार चाँद लगा रही थी।

अगले दिन यज्ञ के साथ श्री शिवनारायण सक्सेना के संदेश के साथ दीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार हुए। दीक्षा की मार्मिक व्याख्या से प्रभावित होकर हायर सेकंड्री स्कूल की कई छात्राओं ने भी दीक्षा ली, यज्ञोपवीत धारण किया। कार्यक्रम की सफलता में परिव्राजक श्री मानसिंह डोडवा, श्री राजेन्द्र गुप्ता, रूपसिंह भाई, श्रीमती भारती रजनीकांत ज्ञानी आदि का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ एवं पुरानी पत्रिकाएँ वितरित की गयीं।

हिमालय की गोद में

ढरसाल, टिहरी गढवाल (उत्तराखण्ड)

गाँव की खुशहाली एवं संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन हेतु ९ मई को ५ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित हुआ। याजकों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्प लेते हुए विशेष आहुतियाँ समर्पित कीं। डॉ. वी.एन. जोशी ने गाँव के विकास के लिए युवाओं को आगे बढ़ने का आवाहन किया। अनेक युवाओं ने इस दिशा में सार्थक पहल करने का संकल्प लिया।

संस्कार महोत्सव

बेलरायाँ, खीरी लखीमपुर (उत्तर प्रदेश)

१५ से १७ अप्रैल की तारीखों में बेलरायाँ में एक विशाल प्रज्ञा आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की कलशयात्रा में १५०० कलशधारी बहिनों के साथ हजारों अन्य नर-नारी शामिल थे। श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव की टोली ने सामूहिक विवाह संस्कार कराते हुए वहाँ उपस्थित हजारों लोगों को पारिवारिक जीवन में परस्पर स्नेह, विश्वास और संस्कार बढ़ाने के मार्मिक सूत्र दिये।

बेलरायाँ

युवा सम्मेलन में एक हजार कुर्सियों की व्यवस्था की गयी थी, लेकिन जन उत्साह के आगे पाण्डाल बहुत छोटा प्रतीत हुआ। टोली नायक ने युवा शक्ति को व्यसनों से दूर रहकर अपनी वास्तविक शक्ति से समाज सेवा की प्रेरणा प्रदान की। इसी कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का तहसील स्तरीय पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ।

चना बेडा, नुआंपाड़ा (ओडिशा)

दिनांक १५ से १७ अप्रैल की तिथियों में ५ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। नये क्षेत्र होने के बावजूद यहाँ लगभग ५ हजार लोगों की भागीदारी रही।

श्री मीन केतन जी द्वारा संचालित इस आयोजन को अपनी ही भाषा में सुनकर लोगों में जबरदस्त उत्साह का संचार हुआ। उन्हें संगठित कर प्रज्ञा मण्डल एवं महिला मण्डल का स्वरूप दे दिया गया। इस दौरान ८ पुंसवन, २ अन्नप्राशन, ३३ मुण्डन, ७ विद्यारंभ सहित अनेक संस्कार सम्पन्न कराये गये।

चना बेडा, नुआंपाड़ा

साइकिल यात्रा से दिया जन्म शताब्दी का आमंत्रण-संदेश

गोण्डा (उत्तर प्रदेश) : गायत्री ज्ञान मंदिर, इमलिया, गोण्डा ने १७ अप्रैल को साइकिल एवं मोटर साइकिल यात्रा का आयोजन किया। बैनर-तख्तियों से सजी साइकिलों से युक्त युग निर्माण जहाँ-जहाँ से गुजरे, जन्म शताब्दी का आमंत्रण और युग निर्माणी उद्‌घोषों के साथ पूरे क्षेत्र को गुंजायमान करते गये।

रैली ने पूरे गोण्डा नगर का मंथन किया। सायंकाल ५ बजे रैली के समापन पर राष्ट्र जागरण दीपयज्ञ हुआ, जिसे बहिनों की टोली ने सम्पन्न कराया। वहाँ उपस्थित सैकड़ों श्रोताओं को नवसृजन अभियान में भागीदारी करते हुए जन्म शताब्दी के निमित्त बुराइयाँ त्यागने और अच्छाइयाँ ग्रहण करने के संकल्प दिलाये गये।

संत ने उठाया समाज निर्माण का बीड़ा

धौलपुर (राजस्थान) : चम्बल के किनारे ग्राम मोरौली के पास रहने वाले श्री हरिगिरी महाराज ने युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी करते हुए अपने समाज के नवनिर्माण का आन्दोलन छेड़ दिया है। वे मृत्युभोज पूरी तरह बंद करने, शादी में दहेज-चढ़ावा की परंपरा रोकने, बैण्ड और आतिशबाजियों का प्रचलन बंद करने और नशेबाजी को रोकने का अभियान चला रहे हैं।

महाराज जी ने अब तक उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के २० स्थानों पर गायत्री यज्ञों का आयोजन कर इन आन्दोलनों के प्रति जनचेतना जगायी है। उनके प्रति आस्था रखने वाले लोग, विशेषत: गूर्जर समाज ने उनकी प्रेरणाओं पर अमल करना आरंभ कर दिया है।

पूर्व मंत्री श्री रुस्तम सिंह, पूर्व विधायक श्री रामवरण सिंह गूर्जर, गुर्जर महासभा के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह घुरैया आदि विशिष्टजन इस आन्दोलन में महाराज जी के साथ हैं।

बड़ा व्यक्ति बनने की नहीं, ऊँचे काम करने की कोशिश करो। बड़प्पन का यही नियम है।

मॉरिशस में गायत्री जयंती पर आयोजित हुआ २४ कुण्डीय गायत्री यज्ञ

युगऋषि की जन्म शताब्दी में भागीदारी के लिए सारे देश में उमड़ी आस्था

लांग माउंटेन (मॉरिशस)

गायत्री शक्तिपीठ लांग माउंटेन द्वारा गायत्री जयंती का पावन पर्व विशाल फुटबॉल मैदान में २४ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाया गया। ९, १० एवं ११ जून के तीन दिवसीय कार्यक्रम में हजारों लोगों ने भाग लिया। शांतिकुंज से पहुँची प्रो. विश्वप्रकाश त्रिपाठी, डॉ. कामता प्रसाद साहू एवं श्री हेमलाल तत्त्वदर्शी की वरिष्ठ टोली ने इस कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रज्ञावतार के लीला संदोह का आभास कराया। इस कार्यक्रम के माध्यम से पूरे मॉरिशस में परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी का संदेश पहुँचाया गया।

पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी श्रीमती कात्यानी जग्गू जी द्वारा ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उन्होंने गायत्री जयंती, गंगा दशहरा और परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में हुए विशेष पूजन क्रम में बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया। महात्मा गाँधी इंस्टीट्यूट, रवीन्द्रनाथ टैगोर इंस्टीट्यूट आदि प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रबुद्धजन बड़ी संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित थे। शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने युग के नवनिर्माण के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर वैश्विक परिवर्तनों में महाकाल की भूमिका पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। युवाशक्ति से आगे आने और युग की सबसे बड़ी आध्यात्मिक क्रांति का हिस्सा बनने का आवाहन किया।

इस महायज्ञ में श्री अर्जुन कूशल-भूतपूर्व कृषि अधिकारी मॉरिशस, वहाँ के प्रधानमंत्री डॉ. नवीन रामगुलाम, शिक्षा मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री आदि ने भी गायत्री जयंती समारोह में भाग लिया। यह कार्यक्रम किसी वर्ग विशेष तक सीमित नहीं रहा, ईसाई-मुस्लिम सभी लोगों ने इसमें श्रद्धापूर्वक भाग लिया। आगामी दिसम्बर माह में वहाँ योग प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य शिविर के आयोजन की रूपरेखा तैयार हुई। मॉरिशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन (एमबीसी) द्वारा हरिद्वार (भारत) में ६ से १० नवम्बर की तारीखों में होने वाले शताब्दी महाकुंभ के कार्यक्रम के मॉरिशस में प्रसारण की व्यवस्था पर चर्चा हुई। योग, ध्यान आदि के कार्यक्रम भी हुए।

कार्यक्रम की सफलता में स्थानीय मीडिया का विशेष सहयोग मिला, जिसने पूरे राष्ट्र में कार्यक्रम का प्रचार और प्रसारण किया था। श्रीमती ज्योति ने अपनी ओर से स्वयं भोजन महाप्रसाद की व्यवस्था की थी।

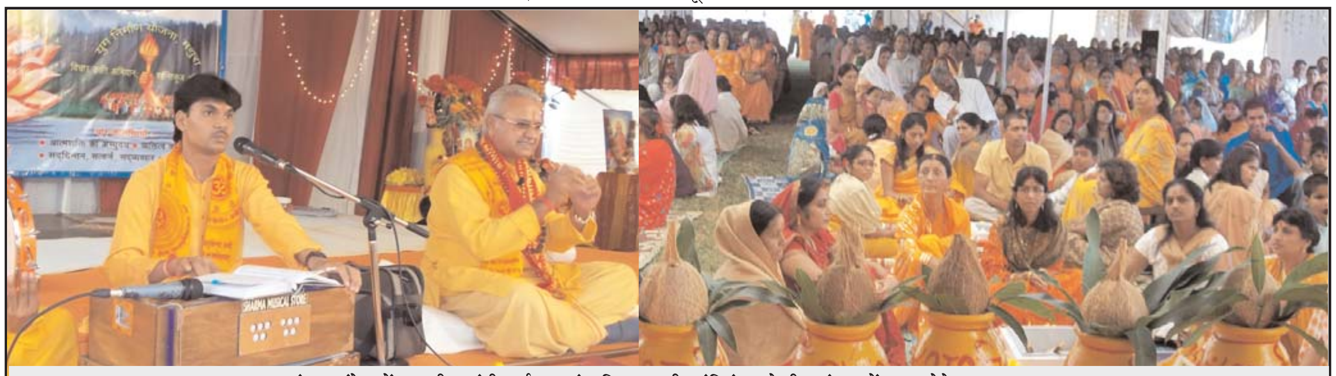

लांग माउंटेन में गायत्री जयंती पर्व का संचालिन करती शांतिकुंज टोली एवं उसमें भाग लेते प्रबुद्ध श्रद्धालु

डीपिने में

डीपिने स्थित वेदमाता गायत्री मंदिर में भी उत्साह और उल्लासपूर्वक गायत्री जयंती पर्व मनाया गया। ९ कुण्डीय यज्ञ एवं दीपयज्ञ के साथ सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम का संचालन भी शांतिकुंज की टोली द्वारा ही किया गया। यह केन्द्र पिछले २८ वर्षों से डीपिने वासियों की आस्था का केन्द्र है।

मॉरिशस के काली मंदिर में गायत्री जयंती के उपलक्ष्य में भजन संध्या एवं प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

जीवित वही है, जिसका मस्तिष्क ठण्डा, रक्त गर्म, हृदय कोमल और पुरुषार्थ प्रखर है।

युवा प्रकोष्ठ की प्रांतीय बैठक में लिये गये अनेक संकल्प

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ युवा प्रकोष्ठ की प्रांतीय बैठक २९ मई को गायत्री शक्तिपीठ भिलाई सेक्टर-६ में आयोजित हुई। इसमें २०० युवा प्रतिनिधियों की भागीदारी रही। उन्होंने सभी बिंदुओं पर चर्चा में उत्साहपूर्वक भागीदारी करते हुए जन्मशताब्दी के कार्यक्रमों की सफलता के संकल्प लिये। जोनल प्रमुख डॉ.अरुण मढ़रिया, युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौर, डॉ. हेमंत कौशिक एवं शक्तिपीठ प्रमुख श्री वासुदेव शर्मा के मार्गदर्शन में बैठक सम्पन्न हुई।

समयदान : जन्मशताब्दी महोत्सव के मुख्य आयोजन हेतु १ एवं २ माह के लिए युवा समयदानियों को शांतिकुंज भेजने का संकल्प लिया गया, जिसकी सूची प्रत्येक जिले से ३० जून तक प्रांतीय कार्यालय भेजने के निर्देश दिये गये। इन युवाओं का नियोजन विभिन्न विभागों में किया जायेगा।

व्यसनमुक्ति : रचनात्मक आंदोलन के तहत व्यसन मुक्ति अभियान के राज्यव्यापी कार्यक्रम का निर्धारण किया गया। इसके अंतर्गत -

०२ जुलाई को प्रांत के सभी १८ जिला मुख्यालयों में एक साथ जन जागरण रैली के साथ कलेक्टर को मुख्यमंत्री के नाम से ज्ञापन सौंपा जायेगा। जिसमें- १. सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार सार्वजनिक स्थानों से १०० मीटर के भीतर की शराब की दुकानों को हटाने २. सूचना के अधिकार के तहत जानकारी प्राप्त कर अवैध शराब की दुकानों को तत्काल हटाने और ३. प्रांत में पूर्ण शराब बंदी करने की माँग की जायेगी।

- शासकीय कर्मचारियों को कार्यालय में किसी भी प्रकार की नशे की हालत में पाये जाने पर तत्काल उस पर कार्यवाही होनी चाहिये।
- नशा से होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक नुकसान बताने वाला पाठ्यक्रम कक्षा ६वीं से १२वीं तक के विद्यार्थियों के लिए शामिल करने की माँग की जायेगी।
- प्रत्येक जिला मुख्यालय में नशा मुक्ति केन्द्र की स्थापना होगी, जहाँ पर नशा छुड़ाने के विभिन्न उपायों व आयुर्वेदिक दवाइयों की जानकारी के साथ उनकी उपलब्धता भी रहेगी।
- स्कूलों में नशा निवारण संबंधी कक्षा लेकर बच्चों को इससे दूर रहने हेतु संकल्प दिलाये जायेंगे।
- महाविद्यालयों के लिए पावर प्वाइंट बनाकर उनमें प्रोजेक्टर के माध्यम से अपनी बात प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया है।
- जिला स्तर पर नशा मुक्ति अभियान हेतु व्यावहारिक प्रशिक्षण करने का निर्णय लिया गया है।

वृक्षारोपण : शांतिकुंज के संकल्प में भागीदारी करते हुये पावन गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पूरे प्रदेश भर में ५ लाख पौधों का रोपण करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जायेगी

युवा सक्रियता : विकास खण्ड एवं जिला स्तर पर युवकों की सदस्यता बढ़ाने का संकल्प लिया गया।

-कुछ जिलों में गठित दिया समूह के युवा भाई-बहिनों के साथ वार्षिक कार्ययोजना पर चर्चा हुई एवं अन्य जिलों में भी दिया समूह गठित करने का निर्णय लिया गया ।

कैरियर काउंसिलिंग : युवाओं के लिए कैरियर काउंसिलिंग की व्यवस्था की गई है । जिसके तहत प्रांत के विभिन्न संस्थानों में खाली पदों की जानकारी लेकर संबंधित युवा साथी को अवगत कराने एवं उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन देने का निर्णय लिया गया है। इसके लिये रायपुर में केन्द्र बनाया गया है ।

नशा मुक्ति गीतों की सी.डी. का विमोचन

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ द्वारा नशा मुक्ति अभियान को प्रभावी बनाने एवं गांव-गांव तक पहुचांने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ी भाषा में प्रथम बार ऑडियो सीडी के रूप में नशा मुक्ति गीतमाला प्रस्तुत की जा रही है । इसका विमोचन जोनल प्रभारी डॉ. अरुण मढ़रिया, युवा प्रांतीय संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौर, शक्तिपीठ प्रमुख श्री वासुदेव शर्मा, गीतकार एवं गायक श्री सोहन कुमार साहू, वरिष्ठ कार्यकर्ता डॉ० हेमंत कौशिक के द्वारा किया गया।

प्रखर युगनिर्माणियों की चिरविदाई

मेडिकल कॉलेज को किया देहदान

वलसाड (गुजरात)।

दक्षिण गुजरात में मिशन की नींव माने जाने वाले प्रमुख युग सैनिकों में से एक श्री कांतिभाई पटेल का दिनांक १३ जून २०११ को ८१ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे गुजरात में वलसाड़ के निवासी थे। सन् ७४ में मिशन से जुड़े और २५ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के रूप में सन् ७८ में दक्षिण गुजरात का पहला सबसे बड़ा कार्यक्रम आयोजित कराया। आज भी वे चिरयुवा रहते हुए मिशन की गतिविधियों में पूरे उत्साह से सक्रिय थे।

''जीवन ऐसा जियो कि अनेकों का जीवन सुधरे और मृत्यु ऐसी हो कि अनेकों को नवजीवन मिले।'' ऐसे उच्च विचारों के साथ स्व. श्री कांतिभाई ने हिंदू धर्म की परंपराओं को तोड़कर अपनी मृत देह अग्नि को समर्पित न करते हुए दो वर्ष पहले मरणोपरांत देहदान करने का संकल्प लिया था। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मंगलाबेन और सुपुत्र चि. विपुल पटेल ने उनके संकल्प के अनुरूप पूरे विधि-विधान से स्व. कांतिलाल पटेल का देहदान किया। उनकी पार्थिव देह वैदिक डेंटल कॉलेज एण्ड रिसर्च सेंटर, दमण को दान कर दी है। देहदान की प्रक्रिया के समय जनसैलाब उमड़ पड़ा। सबने अपने प्यारे 'कांतिदादा' को भावभरी अंतिम विदाई दी।

निवाड़ी, टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)

अपनी सेवा-सक्रियता के लिए लोकप्रिय श्री बाबूलाल गुप्ता का १ मई २०११ को देहावसान हो गया। वे पूरे बुंदेलखण्ड में 'दादाजी' के उपनाम से विख्यात थे। अश्वमेध यज्ञों से लेकर हर आयोजन में वे अपने अथक श्रम से लोगों को प्रेरणा देते हुए नेतृत्व करते रहे। आज भी पूरे बुंदेलखण्ड में दीवारों पर उनके द्वारा लिखे सद्वाक्य उनकी याद दिलाते हैं। उनका निधन ओरछा के सुप्रसिद्ध तीर्थ रामराजा के श्रीचरणों में चरणामृत एवं प्रसाद ग्रहण करते हुए हुआ।

शांतिकुंज एवं समस्त गायत्री परिवार दिवंगत आत्मा की शांति, सद्गति मिले और उनके परिवारी जनों को इस आघात को सहने की हिम्मत मिले, ऐसी प्रार्थना परम पिता परमात्मा से करता है।

समाज का सौन्दर्य, सुख और शान्ति चरित्रवान् व्यक्तित्वों के द्वारा ही स्थिर रहती है।

परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी पर विशेष श्रद्धांजलि

सेवा चेतना का 'पं.श्रीराम शर्मा आचार्य विशेषांक' प्रकाशित

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित हुआ विशेषांक

स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि, निवर्तमान शंकराचार्य
आचार्य जी के समक्ष पूरा राष्ट्र, राष्ट्र की संपूर्ण समस्याएँ थीं और उनका निदान भी। उन्होंने दरिद्र और उपेक्षितों के भीतर भी ज्योति जगाने का प्रयास किया। उनके जीवन का एक-एक क्षण एक-एक ग्रंथ लिखने जैसा है। जीवन में सादगी, मितव्ययिता और यज्ञ भाव का विस्तार उनके जीवन की प्रमुख शिक्षाएँ हैं।

माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देव संस्कृति विवि.
हमारा मिशन तपस्वियों का मिशन है, जो लोगों की गाढ़ी कमाई से सींचा गया है। भाऊ साहब देवरस न्यास की परम पूज्य गुरुदेव को दी गयी यह श्रद्धांजलि निश्चित रूप से परिवर्तन की इस वेला में सज्जनों के सत्प्रयासों को प्रेरणा और बल प्रदान करेगी।

विशेषांक का विमोचन करते माननीय कौशिक जी, माननीय डॉ. पण्ड्या जी, स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि एवं अन्य

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा अपनी अर्धवार्षिक पत्रिका 'सेवा चेतना (जनवरी से जून २०११)' का अंक परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में 'पं.श्रीराम शर्मा आचार्य विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया है। विशेषांक में ख्यातिप्राप्त चिंतक, अध्यात्मवेत्ता, साहित्यकार, कवि, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, राजनेता, पत्रकार आदि के लेख संग्रहीत हैं। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के जीवन और आन्दोलन से जुड़े संस्मरणों, घटनाओं को उकेरा गया है। पत्रिका का संपादन डॉ. विजय कर्ष-प्रोफेसर संस्कृत विभाग लखनऊ ने किया है।

९ जून को इसका लोकार्पण शांतिकुंज के दिव्य प्रांगण में आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की अध्यक्षता में निवर्तमान शंकराचार्य स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि, श्री मदन कौशिक-मंत्री उत्तराखण्ड सरकार, उत्तराखण्ड पुलिस शिकायत प्राधिकरण के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री शंभुनाथ श्रीवास्तव, भाऊराव देवरस सेवा न्यास के अध्यक्ष डॉ. ईश्वरचंद्र गुप्त, उपाध्यक्ष डॉ. ए.पी. सिंह, विद्या भारती के मार्गदर्शक श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाईजी', उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष प्रो. महावीर अग्रवाल आदि मंचासीन गणमान्यों की मुख्य उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर उपस्थित हजारों श्रद्धालु भाई-बहिनों एवं गणमान्यों को संबोधित करते हुए उन्होंने पूज्य गुरुदेव के जीवन और उनके विराट कर्त्तत्व की स्मृतियों को ताजा करते हुए अतिशय आनंद की अनुभूति की। गणमान्यों ने भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रयासों की भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कार्यक्रम में प्रो. महावीर अग्रवाल ने स्वागत भाषण दिया। इसका संचालन श्री राममहेश मिश्र ने किया।

माननीय श्री मदन कौशिक जी, मंत्री उत्तराखण्ड सरकार
दुनिया का शायद ही कोई धर्मग्रंथ होगा, जो पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य में न हो। शांतिकुंज पूरी दुनिया को उस रूप में मार्गदर्शन दे रहा है, जिसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी। हरिद्वार में होने वाले शताब्दी कुंभ में हमारा पूरा सहयोग और भागीदारी होगी।

श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाईजी':
पूज्य गुरुदेव से वार्ता के समय उन्होंने मुझे कहा था, "इस विध्वंस से राष्ट्र को, मानव जाति को बचा सकता है तो वह गायत्री मंत्र ही बचा सकता है।" उन्होंने कहा था, "आप जिस कार्य को करते हैं, उसे करते रहिए, बच्चों को संस्कार देते रहेंगे तो हम गौरवशाली भारत की तस्वीर देख सकेंगे।"

योग विज्ञान ओरिएण्टेशन शिविर

उत्तराखण्ड के प्रत्येक जिले के चिकित्सकों ने भाग लिया

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में छः दिवसीय योग विज्ञान ओरिएण्टेशन शिविर आयोजित हुआ। उत्तराखण्ड की महानिदेशक डॉ. पूजा भारद्वाज ने ५ जून को इसका उद्घाटन किया। उन्होंने योग एक समग्र विज्ञान है और आयुर्वेद को उसका महत्त्वपूर्ण अंग बताते हुए देव संस्कृति विवि. जैसी सेवा संस्थाओं द्वारा उत्तराखण्ड में की जा रही सेवाओं और जनचेतना जगाने की प्रयासों की सराहना की।

देसंविवि में स्कूल ऑफ योग एण्ड हैल्थ के निदेशक डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने इस अवसर पर समस्त अतिथियों और प्रतिभागी चिकित्सकों का स्वागत किया। उल्लेखनीय है कि इस शिविर में उत्तराखण्ड के सभी १३ जिलों के ३० चिकित्सकों ने भाग लिया था।

विशेष अतिथि पद्मश्री भारत भूषण ने योग को मन को छूने वाली चिकित्सा बताते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यह शिविर जन-जन को लाभान्वित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

उद्घाटन शिविर की अध्यक्षता कुलपति डॉ. एस.पी. मिश्र ने की। उन्होंने योग सहित समस्त वैकल्पिक चिकित्साओं पर देसंविवि में हो रहे शोध कार्यों की जानकारी दी, ताकि इसका लाभ शिविरार्थियों के माध्यम से प्रदेश के हर वर्ग-हर व्यक्ति तक पहुँच सके। डॉ. कामाख्या कुमार शिविर के संयोजक थे।

कार्यशाला का समापन समारोह १० जून को आयोजित हुआ। इस अवसर पर मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. ईश्वर वासवरेड्डी ने ध्यान की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ध्यान के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में तेजी से बदलाव आता है।

कुलसचिव, देसंविवि ने प्रतिभागी चिकित्सकों से आने वाले 'आध्यात्मिक कल' के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. एस.डी. शर्मा ने भी अपने विचार रखे।

समापन समारोह में कई चिकित्सकों ने कार्यशाला की उपलब्धियों की चर्चा की। उन्होंने योग से मानव काया को होने वाले लाभों के 'साइंटिफिक डॉक्यूमेंटेशन' की जरूरत बतायी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति बने डॉ. चिन्मय पण्ड्या

डॉ. चिन्मय पण्ड्या को देसंविवि का प्रति-कुलपति नियुक्त किया गया है। वे विवि में स्कूल ऑफ योग एण्ड हैल्थ के पद के उत्तरदायित्वों के साथ-साथ प्रति-कुलपति की जिम्मेदारी सँभालेंगे। उन्होंने अपना कार्यभार सँभाल लिया है।

डॉ. चिन्मय जी देसंविवि के प्रथम प्रति-कुलपति हैं। उन्होंने हिमालय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, जॉलीग्रांट से एमबीबीएस की शिक्षा प्राप्त करने के बाद लंदन के रॉयल मेडिकल कॉलेज से एम.आर.सी.पी. की उच्च शिक्षा ग्रहण की है। वे एक कुशल मनोचिकित्सक हैं। उनकी प्रारंभिक शिक्षा शांतिकुंज के गायत्री विद्यापीठ में ही सम्पन्न हुई है। डॉ. चिन्मय जी ने आजीवन समाजसेवा करने का व्रत लिया है।

उल्लेखनीय है कि निदेशक स्कूल ऑफ योग एण्ड हैल्थ के पद पर रहते हुए योग, मनोविज्ञान एवं समग्र स्थास्थ प्रबंधन कार्यक्रमों को अभिनव दिशा दी है।

विशिष्ट समयदान संगोष्ठी

चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों की विशेष गोष्ठी २०-२१ अगस्त को शांतिकुंज में

२० एवं २१ अगस्त २०११ (जन्माष्टमी)की तारीखों में शांतिकुंज में चिकित्सकों एवं चिकित्सा सेवाओं से जुड़े परिजनों की विशेष गोष्ठी आयोजित हो रही है। जो परिजन विराट शताब्दी महाकुंभ (६ से १० नवम्बर २०११) के लिए समयदान करना चाहते हैं, वे इस गोष्ठी में आमंत्रित हैं। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए निम्न मोबाइल नम्बरों पर संपर्क करें। इन्हीं मोबाइल नम्बरों पर अपने आने की सूचना भी पहले ही दे दें, तो सुविधा होगी।

मोबा.नं- 09258369503, 09258369504, 09258369520

गायत्री जयंती पर प्रकाशित नया साहित्य

नयी लिखी अथवा विभिन्न भाषाओं में अनुवादित पुस्तकें एवं ऑडियो सीडी

हिन्दी में-योग के वैज्ञानिक प्रयोग,

बंगाली में - *परिवर्तन के महान क्षण, *समस्या आज की समाधान कल के, *शिक्षा ही नहीं विद्या भी, भाव संवदेना की गंगोत्री, *अपनी कमजोरी से लड़े मजबूत बनें, *प्रज्ञा अवतार की विस्तार प्रक्रिया।

नेपाली में - *धन का सदुपयोग, नारी की महानता, *वेदों की स्वर्णिम सूक्तियाँ, *नवयुग का मत्स्यावतार, *कर्मकाण्ड क्यों और कैसे?, *शिक्षा ही नहीं विद्या भी, *स्वस्थ रहने के सरल उपाय, *जीवन का उत्तरार्ध लोक सेवा में लगाएँ, *विवाहित जीवन के अलौलिक आनन्द, *ज्ञानयोग कर्मयोग भक्तियोग, *उपासना के दो चरण जप और ध्यान, *बुद्धि बढ़ाने के वैज्ञानिक विधि, *अंध विश्वास से लाभ कुछ नहीं हानि अपार।

तमिल में - *सफलता के तीन साधन, *लोकसेवियों के लिए दिशाबोध, *मंदिर जन जागरण के केन्द्र बने, *प्रज्ञा अभियान के योग व्यायाम, *आपत्तियों में धैर्य, *इन्द्रिय संयम, *मन के हारे हार है मन के जीते जीत, *ईश्वर कौन है?कहाँ है? कैसा है?, *ईश्वरीय न्याय, *गायत्री प्रार्थना, *नारी की महानता, *क्या नारी इसी दुर्दशा में पड़ी रहेगी, * जाग्रति अभियान, *मसाला वाटिका से घरेलू उपचार, *गावः सर्वसुखःप्रदा, *बाल निर्माण कहानियाँ भाग-एक व दो, *गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका, *कहीं आप जहर तो नहीं खा रहे, मंत्र विज्ञान, *बलिवैश्व, *हारिए न हिम्मत।

तेलुगु में - *उपासना क्यों फलित नहीं होती, *स्त्रियों का गायत्री साधना का अधिकार, *ईश्वर का अस्तित्व-तत्त्वज्ञान, *वेदमाता देवमाता भगवती गायत्री, *सामाजिक कर्त्तव्य, *धर्मशास्त्रों का सार गायत्री, *सामूहिक साधना प्रयोजन, *गायत्री उपासना से मानव जीवन की सार्थकता।

सिंधी में - *समयदान ही युगधर्म, *व्यवस्था बुद्धि की गरिमा।

पंजाबी में - हमारा यज्ञ अभियान

ऑडियो सीडी- *ध्यान, *वेदमाता गायत्री मंत्र व आरती (स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर की प्रस्तुती), जन्म शताब्दी, चालीसा सत्संकल्प दोहा शैली।

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

दूरस्थ शिक्षा को-ऑर्डिनेटरों की कार्यशाला

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा को-ऑर्डिनेटर की दो दिवसीय कार्यशाला ७ एवं ८ जून को सम्पन्न हुई, जिसका उद्घाटन उत्तराखण्ड के उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. एम.सी. त्रिवेदी ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसमें हरिद्वार, देहरादून, पौड़ी गढ़वाल, उत्तरकाशी, हल्द्वानी, चमोली, पिथौरागढ़, कोटद्वार, अल्मोड़ा आदि स्थानों पर कार्यरत दूरस्थ शिक्षा केन्द्रों के ३२ समन्वयकों ने भाग लिया। इनमें राजकीय महाविद्यालयों एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं को-ऑर्डिनेटर प्राध्यापक शामिल थे।

डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि उत्तराखण्ड के दूरस्थ पर्वतीय स्थानों पर जीवन के लिए जरूरी ज्ञान के विस्तार के लिए दूरस्थ शिक्षा केन्द्रों की महती आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति देसंविवि आवश्यकता कर रहा है। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. एस.पी. मिश्र ने संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य के कोने-कोने में दूरस्थ शिक्षा केन्द्रों के विस्तार का संकल्प दोहराया। उन्होंने बताया कि देसंविवि के योग विज्ञान, परिवार प्रबंधन, स्वास्थ्य संरक्षण जैसे दैनंदिन जीवन के लिए उपयोगी पाठ्यक्रम राज्य में बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं।

दुष्कर्म स्वतः ही एक अभिशाप है, जो कर्त्ता को भस्म किये बिना नहीं रहता।

गायत्री जयंती, गंगा दशहरा और पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस पर तीन दिवसीय समारोह

'वेदमाता' को 'विश्वमाता' के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान

आदरणीया शैल जीजी

एक शक्ति की दो धाराएँ गंगा-गायत्री

गंगा और गायत्री एक ही शक्ति की दो धाराएँ हैं। एक स्थूल जगत में पतित पावनी है, दूसरी सूक्ष्म रूप से प्राणों का उत्थान करने वाली हैं। दोनों ही का धरती पर अवतरण एक ही दिन हुआ, चाहे समय अलग-अलग ही क्यों न हो। गायत्री प्रेम, सद्ज्ञान और सद्विचारों को प्रवाहित करने वाली दिव्य धारा है और गंगा निर्मलता, करुणा-ममता को।

घर की देवी को पहचानो

स्वर्ग-नरक केवल दृष्टिकोण का नाम है। लोग स्वर्ग पाने के लिए न जाने कितने देवी-देवताओं के पास जाते हैं। काश! हम अपने घर की देवी का दर्शन कर पाते तो घर स्वर्ग बन गया होता। वह देवी जिसने नौ माह तक पेट में रखकर अपने हाड़-मांस का पिण्ड बनाया। जिसने अपना हजारों सीसी खून दूध बनाकर बच्चे को पिलाया और उसके बाद भी भावनात्क पोषण देती रही। क्या हमने उसके त्याग-बलिदान को जानने की कोशिश की?

कौन सुनेगा ईसा की पुकार?

पूज्य गुरुदेव ने एक गोष्ठी में अपने बच्चों से पूछा था-''ईसा सूली पर चढ़े हैं। क्या कोई ईसा को पानी दे सकेगा?'' उनसे पूछने पर गुरुदेव ने बताया, ''पहचान सको तो पहचानो। स्वाधीनता-संस्कृति के लिए अपना सब कुछ दाव पर लगा देने वाला ईसा तुम्हारे सामने है।'' आज उस ईसा को युवा रक्त की जरूरत है। उनकी आकांक्षा को यदि हम पूरा कर सके तो धन्य हो जायेंगे।

गायत्री जयंती-गंगा दशहरा का पावन पर्व शांतिकुंज में जन्म शताब्दी वर्ष की विशिष्ट प्रेरणाओं और योजनाओं का भावभरा स्मरण करते हुए 'ध्यानपर्व' के रूप में मनाया गया।

आदरणीय डॉ. साहब, आदरणीया जीजी गायत्री जयंती के पावन अवसर पर हजारों नर-नारियों को गायत्री की दीक्षा दिलाते हुए

इस अवसर पर जगह-जगह ध्यान सत्र आरंभ करने, देश में एक करोड़ वृक्ष लगाने, संगठन में युवा रक्त को प्रवेश दिलाने जैसे संकल्पों के साथ हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इसी दिन गायत्री को विश्वमाता बनाकर उन्हीं की गोद में ही

प्रज्ञावतार नाटक की एक झलक

समाहित हो जाने वाले युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की पावन स्मृतियों को भी भावभरे अंत:करण से याद किया गया।

तीन दिवसीय समारोह के निर्धारित स्वरूप के अनुरूप सभी कार्यक्रम उमंग और उल्लास के साथ सम्पन्न हुए। पर्वपूजन का मुख्य कार्यक्रम आदरणीया शैली जीजी एवं आदरणीय डॉ. साहब की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। समारोह की कुछ विशिष्ट झलकियाँ इस प्रकार हैं।

प्रभात फेरी : १० जून को प्रात: देसंविवि के महाकाल प्रांगण से निकाली गयी प्रभात फेरी के साथ कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। यह रैली देसंविवि के महाकाल मंदिर प्रांगण से आरंभ होकर हरिपुर कलाँ गाँव में जनजागरण करते हुए शांतिकुंज पहुँची।

अखण्ड जप : १० जून की सायंकाल से २४ घण्टे का अखण्ड जप आरंभ हुआ। हजारों लोगों ने इसमे भाग लिया।

ध्यान : गायत्री जयंती को ध्यान-पर्व के रूप में मनाने के निर्णय के अनुसार ध्यान साधना को विशेष महत्त्व दिया गया। गायत्री जयंती की प्रात: 'अमृत वर्षा ध्यान' कराया गया।

संस्कार : ११ जून की प्रात: आदरणीया जीजी-डॉ. साहब ने दो हजार से अधिक लोगों को गायत्री की दीक्षा दिलायी। उस दिन ११ जोड़ों का आदर्श विवाह हुआ। पुंसवन, मुण्डन, विद्यारंभ, नामकरण आदि संस्कार भी सैकड़ों की संख्या में हुए।

दीपयज्ञ : ११ जून की सायंकाल दीपयज्ञ आयोजित हुआ।

प्रज्ञावतार : १२ जून की सायंकाल हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों में **प्रज्ञावतार नाटक** प्रमुख आकर्षण था। जन्म शताब्दी वर्ष के बड़े मंचों पर इसका मंचन करते हुए मिशन के उद्देश्य और कार्यक्रमों का परिचय जन-जन को देने की तैयारी है।

जनजागरण रैली : १२ जून की सायंकाल निकाली गयी जनजागरण ने नगर में आध्यात्मिक उल्लास की अनूठी छटा बिखेरी। रैली शांतिकुंज में देवात्मा हिमालय के सामने से

नगर में निकली रैली

आरंभ हुई। आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा एवं श्रीमती यशोदा शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर इसे रवाना किया। चार हजार से अधिक लोग हाथों में केशरिया झंडे, बैनर, ढपली आदि लेकर ओजस्वी नारे लगाते चल रहे थे। यह रैली ब्रह्मवर्चस, भारतमाता मंदिर क्षेत्र, पावनधाम, दुधाधारी चौक होते हुए शांतिकुंज लौटी। लगभग ५ कि.मी. मार्ग तय कर लौटी इस रैली का जगह-जगह भव्य स्वागत हुआ।

आदरणीय डॉ. साहब

गायत्री विचार शैली और जीवन शैली सुधारने का व्यापक प्रयोग है। वही पूज्य गुरुदेव के जीवन का सार है, जीवन का पर्याय है। जो गायत्री जपता है, वह ब्राह्मण और ऋषि बनता जाता है। ब्राह्मण बने बिना ब्रह्मविद्या गायत्री की प्राप्ति हो ही नहीं सकती। जीवन शैली बदले बिना गायत्री की कृपा हो ही नहीं सकती। गायत्री मंत्र में वह शक्ति है, जो परमाणु बम की विभीषिका से भी बचा सकती है।

भावी कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव का जन्म शताब्दी वर्ष सन् २०११ से २०१३ तक मनाया जायेगा। आने वाला वर्ष २०१२ सौर मण्डल में होने वाली उथल-पुथल का वर्ष है। अत: वर्ष २०१२ को हम **'सौर साधना वर्ष'** के रूप में मना रहे हैं। जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम निम्नानुसार हैं :-

* **ध्यान सत्र :** गायत्री जयंती से ही जगह-जगह ध्यान सत्रों का शुभारंभ हो रहा है। ध्यान अंतर्जगत की यात्रा का विधान है, परमात्मा से साक्षात्कार की विद्या। शरीर के व्यायाम के बाद अब अंतर्जगत का व्यायाम जरूरी है। ध्यान के अनेक प्रकार हैं, सबसे श्रेष्ठ है सूर्य-रश्मियों का ध्यान। हम ध्यान में सतत अच्छाइयों का चिंतन करें, अच्छाइयों को अपने चरित्र-चिंतन में समाविष्ट करने का प्रयास करें।

* **साधना :** अभी से प्रतिदिन न्यूनतम ११ माला गायत्री मंत्र जप आरंभ कर दें।

* **साहित्य :** पूज्य गुरुदेव के साहित्य के १०००-१००० पृष्ठों वाले १० ग्रंथ प्रकाशित किये जा रहे हैं। छात्र, बुद्धिजीवी, शिक्षक, चिकित्सक, उद्योगपति आदि वर्गों की आवश्यकता के अनुरूप साहित्य के वर्गीकृत सेट बनाये जा रहे हैं।

* **संगठन :** हमें अपने संगठन में युवा रक्त को प्रवेश कराना है। हम न थकेंगे, न रुकेंगे। नये रक्त के साथ हमारा मिशन चिरयुवा बना रहेगा।

* **वृक्षारोपण :** गायत्री जयंती से देश में एक करोड़ वृक्ष लगाने का अभियान आरंभ हो गया। गुरुपूर्णिमा से शांतिकुंज आने वाले शिविरार्थियों को गुरुप्रेरणा और आशीर्वाद स्वरूप पौध वितरण का कार्य नियमित रूप से आरंभ हो जायेगा। हर राज्य और संगठन को उनका निर्धारित लक्ष्य बता दिया गया है।

पर्व की पूर्व संध्या का संदेश

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी

जिसके गायन से प्राणों का त्राण (उत्थान) होता है, वह गायत्री है। आज हमारे प्राणों का घटियापन त्राण चाहता है। इस घटियापन के कारण हम घटिया कामों के लिए उत्साहित होते हैं, बढ़िया कामों के लिए उत्साह और संकल्प नहीं जागता।

पूज्य गुरुदेव कहते थे कि गायत्री को आज विश्वमाता बनाने की आवश्यकता है। यदि वह विश्वमाता है तो किसी सीमा में सीमित नहीं रहेगी। वह हर धर्म-पंथ-वर्ग की माता बनेगी। वह आध्यात्मिक के साथ लौकिक कामना रखने वालों की भी माता बनेगी, वह नास्तिकों की भी माता बनेगी। गायत्री उन सबके कल्याण की विविध धाराओं में प्रवाहित होगी, सबके मन में उस माता के लिए विश्वास जागेगा। यदि पूज्य गुरुदेव के प्रति आपके मन में दृढ़ आस्था है और गायत्री के विश्वमाता बनने की बात पर पूरा विश्वास है, तो जो मिले उसे यह समझाना आरंभ कर दो कि गायत्री विश्वमाता है, वह सबके लिए कल्याणकारी है।

पूर्व संध्या पर मंचासीन डॉ. ओपी शर्मा, श्री शरद पारधी, डॉ. बृजमोहन गौड़, श्री उपाध्याय जी, डॉ. एके दत्ता, श्री कपिल केशरी जी

डॉ. बृजमोहन गौड़

आज के युग की सर्वोपरि आवश्यकता है समयदान। धन-साधन तो समर्थ व्यक्ति सहजता से दान कर देता है, लेकिन समयदान करना एक शिष्य के लिए ही संभव है। निजी कामनाओं को दरकिनार कर जब केवल गुरु की इच्छा को पूरा करने के लिए समयदान किया जाता है तो उसके परिणाम चमत्कारी होते हैं। गुरु को दिये गये समय में भी यदि अपनी इच्छाओं की पूर्ति का तानाबाना बुना जाता रहा, तो उसके परिणाम भी आधे-अधूरे ही मिलेंगे। आज युगदेवता को गायत्री को जन-जन तक पहुँचाने वाले भगीरथों की आवश्यकता है।

श्री शरद पारधी जी

सर्वतोमुखी उत्कृष्टता के प्रति सघन श्रद्धा उत्पन्न करना ध्यान का प्रयोजन है। मन की शक्तियों को बिखराव से रोकने का नाम 'ध्यान' है। स्वामी विवेकानंद कहते थे कि मन को एकाग्र किये बिना समस्त शक्तियों का ज्ञान नहीं पाया जा सकता। जितनी एकाग्रता होगी, उतनी ही शक्ति और सफलता हमें मिलेगी।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी युग चेतना ट्रस्ट शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स,ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक - वीरेश्वर उपाध्याय, पता:- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरा.) पिन 249411. फोन- (01334) 260602, 261955 फैक्स - 01334-260866

सदस्यता, पूछताछ आदि के लिए फोन नम्बर - 09258369725, 01334-260602 एक्सटेंशन 167 से प्रात: 8 से सायं 5 के बीचे संपर्क करें।

RNI-NO.38653/80
R.No.UA/DO/16/2009-11
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/04/05
RENEWED UP TO 2011